हज़रत

अबू बक्र

رضي الله عنه



अहमद नदीम नदवी

हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه

हज़रत

رضي الله عنه

अबू बक्र



अहमद नदीम नदवी



www.idaraimpex.com

हज़रत अबू बक्र

लेखक

अहमद नदीम नदवी

Hazrat Abu Bakr (Raz)



प्रकाशन : 2016

ISBN: 81-7101-532-8

TP-469-16

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नाम और खानदान

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जो पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लगभग तीन साल छोटे थे, उनका नाम था 'अब्दुल्लाह' और उपनाम था 'अबू बक्र'। इस्लाम अपनाने से पहले तो इनका नाम अब्दुल काब था, पर बाद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे अब्दुल्लाह कर दिया। उन्हें लक़ब के तौर पर 'सिद्दीक़' और 'अतीक़' भी कहा जाता था। सिद्दीक़ इसलिए कि मर्दों में सबसे पहले उन्होंने ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रसूल होना तस्लीम किया था और सिद्दीक़ का मतलब है 'बहुत ज़्यादा सच बोलनेवाला' या 'अपने कामों से अपनी बातों की तस्दीक़ करनेवाला', उन्हें अतीक़ इसलिए कहा जाता था कि अरबी में अतीक़ के कई मतलब होते हैं और उनकी शख़्सियत उन तमाम ही अर्थों से मेल खा जाती थी, जैसे वह बहुत ख़ूबसुरत थे और अतीक़ का अर्थ 'सुन्दर' भी है, वह अपने अख़्लाक़ व किरदार में सच्चे और अच्छे थे और अतीक़ हर उस चीज़ को कहते हैं जो सबसे अच्छी हो। इस्लामी उसूलों में पक्के होने की वजह से पैग़म्बरे इस्लाम ने एक बार उनसे कहा था, "ऐ अबू बक्र! तुम नरक की आग से बचे हुए हो"। और अतीक़ हर उस आदमी को कहते हैं जो ग़ुलामी के बंधनों से आज़ाद हो चुका हो।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बाप का नाम उस्मान था, उपनाम अबू क़हाफ़ा था। उनका घराना अरब के अच्छे घरानों में से था। मक्का विजय के बाद वे मुसलमान हुए।

उनकी मां का नाम सलमा और उपनाम अम्मे ख़ैर था, शुरू ही में मुसलमान हो गई थीं। इनसे पहले केवल 39 लोग मुसलमान हुए थे।

मुसलमान होने तक

व्यापार अरबों का पुराना पेशा था, ख़ास तौर से क़ुरैश तो व्यापार के अलावा और किसी पेशे को अपनाना कभी भी पसन्द न करते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी बड़े होकर व्यापार को अपनाया और अपनी लगन, मेहनत, ईमानदारी और सुन्दर व्यवहार की वजह से एक अच्छे व्यापारी बन गए। इस सिलसिले में उन्होंने शाम (सीरिया) और यमन के सफ़र भी किए। वह अपनी सच्चाई और अमानतदारी में अधिक प्रसिद्ध हो गए थे, यहां तक कि मक्केवालों का उन पर इतना भरोसा हो गया था कि वे उनके यहां ख़ूनबहा का माल (क़त्ल के जुर्माने का माल) जमा करने लगे थे और अगर कभी दूसरे व्यक्ति के यहां जमा होता तो क़ुरैश इसे स्वीकार न करते थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को इस्लाम से पहले भी शराब से वैसी ही नफ़रत थी, जैसी मुसलमान होने के बाद रही। उन्होंने एक बार ऐसे ही किए गए एक सवाल के जवाब में कहा कि 'शराब पीने से आबरू लुटती है।'

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की इन्हीं सब ख़ूबियों की वजह से लोग अहम मामलों में उनसे मशिवरे मांगते और उनकी रायों पर भरोसा करते।

उन्हें पैग़म्बरे इस्लाम से बचपन ही से प्रेम था और उनके मन में अपनापन की भावना रची-बसी थी। यही कारण था कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मित्रमंडली के ख़ास मेंबर थे। आम तौर से तिजारती यात्राओं में भी आपका साथ रहा करता था।

मुसलमान हो गए

जिस ज़माने में पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पहली वह्य आई, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तिजारत के सिलसिले में यमन गए हुए थे। जब वापस हुए तो क़ुरैश के सरदार अबू जह्ल, उत्बा और शैबा आदि से मिलने गए। अलग-अलग विषयों पर बातचीत होती रही। जब हज़रत अबू बक्र ने कोई ताज़ा ख़बर पूछी तो बताया कि सबसे बड़ी ख़बर और बड़ी बात यह है कि अबू तालिब के यतीम बच्चे ने नबी होने का दावा किया है। भला वह

नबी कैसे हो सकता है? उसके विरोध की स्कीमें बनाने के सिलसिले में हम तुम्हारा ही इन्तिज़ार कर रहे थे।

ऐसा सुनते ही हज़रत अबू बक्र असल बात जानने के लिए उत्सुक हो उठे और क़ुरैश के इन सरदारों को विदा करके पैग़म्बरे इस्लाम के घर की ओर चल पड़े। कुछ पूछा, कुछ समझा, यहां तक कि मन में सत्य-ज्योति भड़क उठी और वहीं मुसलमान हो गए— बेझिझक, निडर, न भविष्य की परवाह, न वर्तमान का विचार। कैसे थे निर्भीक अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कि सत्य का ज्ञान होते ही, आगे-पीछे हानि-लाभ देखे बिना उसे लपककर अपना लिया। अल्लाह की कृपा उन पर सदा बनी रहे!

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की यह खूबी रहती दुनिया तक मानने लायक़ रहेगी कि उन्होंने जिसे सत्य जाना, उसे बिना किसी भय और झिझक के मान लिया, जिसे सही समझा, उस पर तन-मन-धन से जुट गए, न किसी तरह की खोट, न कैसा भी कपट, कठिन से कठिन घड़ी आ जाए, पहाड़ की तरह अटल।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मर्दों में वे पहले इंसान हैं, जिन्होंने सबसे पहले इस्लाम अपनाया। उस समय तो उंगलियों पर गिने जाने भर मुसलमान थे ही। औरतों में सबसे पहली औरत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं, ग़ुलामों में सबसे पहले मुसलमान ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा थे, लड़कों में सबसे पहले हज़रत अली ने इस्लाम की पुकार का जवाब दिया। उस समय इतने ही भर थे इस्लाम की कांटों भरी राह पर चलनेवाले मुसाफ़िर।

मक्के का जीवन

मक्के में जन्म लेता हुआ यह इस्लामी आन्दोलन, सच पूछिए तो, क़ुरैश और दूसरे अरब क़बीलों के लिए एक चैलेंज था, इसलिए कि इस्लामी आन्दोलन की बुनियाद तौहीद (एकेशरवाद) पर खड़ी हो गई थी, एक ऐसे अल्लाह के इताएत पर, जो पैदा करने वाला है, स्वामी है, पालनहार है, विधाता है, न्यायी है, मानव-जाति की रहनुमाई उसी के ज़िम्मे है। उसकी हिदायत व रहनुमाई के लिए वह अपने पैग़म्बरों को भेजता है जो उसका विधान लाते हैं और जो यह बताते

हैं कि उसकी ख़ुशी किसमें है और किसमें नहीं है और उनकी शिक्षा यह होती है कि अगर तुम अपना लोक-परलोक दोनों सुधारना चाहते हो और हर तरीक़े से अपना जीवन सफल बनाना चाहते हो, तो उस तमाम ताक़तों के मालिक पालनहार की आज्ञाओं का पालन करो, वरन् समझ लो कि तुम्हारा लोक भी बिगड़ेगा और परलोक में भी घाटे के सिवा तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस सिलसिले के आख़िरी पैग़म्बर थे, जो ख़ास तौर से क़ुरैश और अरबवासियों को और आमतौर से पूरे संसारवालों को तौहीद (ऐकश्वरवाद) की यही शिक्षा देने आए थे और बताने आए थे कि इस सत्य को मान लेने में ही तमाम लोगों का लोक-परलोक दोनों में भला होगा। लेकिन यहां तो क़ुरैश और दूसरे क़बीलों ने 'देवी-देवताओं' को ही अपना 'सब कुछ' समझ लिया था। उन्हीं से वे मन्नतें करते, उन्हीं से मुरादें मांगते, उन्हीं के सामने अपनी ज़रूरत रखते, हालांकि उनके ये 'उपास्य' व 'आराध्य' स्वयं रचना थे, रचयिता न थे। अपने वजूद को बाक़ी रखने के लिए वे सभी उसी तमाम ताक़तों के मालिक, पैदा करने वाले के मुहताज थे— कैसे थे उनके ये बोदे व फुसफुसे विचार

एक ओर इस्लाम की बुद्धि की कसौटी पर खरे उतरनेवाले ये सिद्धान्त, दूसरी ओर ग़ैर इस्लाम की परिपाटियां, रस्म व रिवाज और पुरखों के समय से चले आ रहे संस्कार, आख़िर दोनों में निभती भी तो कैसे?

फिर यह केवल विचारों का विरोध न था, बल्कि इसी बुनियादी विचार के बदलने से नया व्यक्ति जन्म ले रहा था, नए समाज का निर्माण हो रहा था, नई सभ्यता सिर उठा रही थी, नैतिक मापदण्ड बदल रहे थे, नई संस्कृति पनप रही थी। ज़ाहिर है कि यह क्रांति व्यक्ति से लेकर समूह तक में पाई जाती थी। ऐसी क्रांती को भला क़ुरैश और दूसरे क़बीले ठंडे पेटों कैसे बर्दाशत कर लेते। उन्हें तो अपने को देखना था, पुरखों की बातें ढोनी थीं, महन्तों का हुक्म मानना था, पुरानी संस्कृति व सभ्यता से चिमटे रहना था, इसलिए उन्होंने जी खोलकर विरोध किया और किया घोर विरोध।

एक ओर विरोधियों की ये सरगर्मियां और दूसरी ओर इस्लाम की कमज़ोर आवाज़, फिर भी देखिए, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का साहस कि उन्होंने

सत्य को बेझिझक अपना लिया, फिर यह कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान क्या हुए, इस्लाम के प्रचार में तन-मन-धन से जुट गए। शुरू के तीन साल तक इस्लामी आन्दोलन खुलकर मैदान में नहीं आया था। व्यक्तिगत रूप से एक-एक से भेंट की जाती, इस्लामी शिक्षाएं उसके सामने रखी जातीं, ऊंच-नीच समझाई जाती, मन कहता तो वह इस्लामी सिद्धान्तों को लपककर अपना लेता, वरन् 'बकवास' समझकर सुनी-अनसुनी कर देता। इस मुद्दत में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी यकसूई से काम किया, इसका अन्दाज़ा इससे कीजिए कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे इस्लाम के महान नेताओं को इस्लाम की गोद में ले आए। इसी तरह हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत अबू सलमा और हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उन्हीं की कोशिशों से इस्लाम अपना लिया।

तीन साल बाद

तीन साल बाद इस्लामी आन्दोलन खुलकर मैदान में आ गया। इस्लाम का खुल्लम-खुल्ला एलान करना था कि विरोधी गुट में जान पड़ गई। उन्होंने इस्लाम को जड़ से उखाड़ फेंकने की पूरी कोशिश शुरू कर दी। अत्याचार और दमन की नीति अपनाई गई, झूठे प्रापगंडे किए गए, निराधार आरोप लगाए गए, तिरस्कार व बहिष्कार किया गया, ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े गए, आर्थिक नाकाबन्दी की गई, ग़रज़ यह कि इस्लाम के उन्मूलन के लिए उनके बस में जो कुछ भी था, उसे किया और पूरा बल देकर किया।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे डिगा देनेवाले हालात में भी अडिग रहे– निर्भीक व निडर, बल्कि संघर्ष में ज्यों-ज्यों तेज़ी पैदा होती जाती थी, उनकी दृढ़ता बढ़ती जाती थी, यहां तक कि उनकी कोशिशों में कमी होने के बजाए ज़्यादती ही होती चली गई– न खाने की सुध, न पीने की चिन्ता, इस्लाम के प्रचार में लगे रहे और बराबर लगे रहे। एक बार तो ऐसा हुआ कि इस्लाम के विरोधी, कुछ क़ुरैश, एक जगह जमा होकर इस्लाम और मुसलमानों ही की चर्चा

कर रहे थे कि इस नए नबी ने तो हमारे 'धर्म' का सत्यानाश कर दिया है कि इतने में पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा की परिक्रमा (तवाफ़) के लिए उधर निकले। वे भीतर घुसे ही थे कि पूरी भीड़ आप पर यह कहते हुए टूट पड़ी कि 'अरे ओ आदमी! तू ही हमारे उपास्यों की निन्दा करता है।' वे आपको मारते जाते थे और कहते जाते थे–

"क्या तू सब खुदाओं को एक कर देगा?" आख़िर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहोश होकर गिर पड़े। किसी ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से जाकर कहा, "अपने मित्र की ख़बर लो।" वे भागे हुए आए और भीड़ में घुस गए। किसी को मारते, किसी को हटाते और कहते जाते– "तुम पर अफ़सोस है। क्या एक व्यक्ति को तुम ऐसा कहने पर मारे डालते हो कि मेरा पालनहार अल्लाह है और हाल यह है कि वह अल्लाह की ओर से खुली दलील तुम्हारे पास लाया है।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के इस तरह बीच में आ पड़ने को भीड़ कब पसन्द करती। सबके सब उन्हीं पर झपट पड़े। इतना मारा कि सिर फट गया और ख़ून बहने लगा। कुछ नातेदारों ने आकर बीच-बचाव किया, तब कहीं जाकर जान बची। उनकी बेटी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि इस घटना के बाद जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु घर पहुंचे तो हाल यह था कि सिर पर हाथ जहां लगता वहीं से बाल अलग हो जाते। एक ओर मार पड़ रही थी और दूसरी ओर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के सब्र और ईमान की दृढ़ता का हाल यह था कि वे यही कहते जाते–

" ऐ आदर और प्रतिष्ठा वाले! तेरी सत्ता बड़ी ही बरकतों वाली है।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जहां एक ओर पूरे मन के साथ इस्लाम के प्रचार में लगे रहे, वहीं उन्होंने अपने माल को भी इस्लाम की राह में वक़्फ़ कर दिया था। शुरू-शुरू में इस्लाम के माननेवालों में उन्हीं लोगों की तादाद ज़्यादा थी जो ग़रीब और बेसहारा थे, पर थे विचारों के स्वतन्त्र, उन्हें न तो अपनी 'साख' देखनी थी, न उन्हें 'वंश-परम्परा' की लाज रखनी थी। उन्हें न धन का लोभ था, न पद का, उन्हें तो सत्य-ज्योति मिलनी चाहिए थी और इसे वे पा गए थे। इन ग़रीबों और निस्सहाय मुसलमानों में बड़े संख्या ऐसी थी जो ग़ुलाम और लौंडी थी

और जिन्हें अपने ग़ैर मुस्लिम मालिकों द्वारा ऐसे-ऐसे कष्ट व दुख झेलने पड़ते थे कि आज भी उन्हें सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ये क्रुर और निष्ठुर उन ग़रीब मुसलमानों को कड़ी धूप में गर्म बालू पर लिटा देते, कभी कुछ करते और कभी कुछ। उनकी इस निष्ठुरता का अंदाज़ा इससे कीजिए कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को उनका मालिक उमैया ठीक दोपहर में जलती हुई रेत पर लिटाता, भारी पत्थर सीने पर रख देता और कहता—

"इस्लाम से इंकार कर, नहीं तो यों ही घुट-घुटकर मर जाएगा।"

पर उस समय भी कष्ट व पीड़ा की इस स्थिति में उनके मुख से 'अल्लाह एक है' की आवाज़ निकलती। फिर उमैया उनके गले में रस्सी बांधकर लड़कों के सुपुर्द कर देता और वे उन्हें शहर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक घसीटते-फिरते। एक दिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की ऐसी क़ाबिले रहम हालत देखी तो उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और सिर्फ़ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ही क्यों, ग़ुलामी की इस लानत से आमिर बिन फ़ुहैरा, नज़ारा, नहदिया, ज़ारिया बिन्त नहदिया रज़ियल्लाहु अन्हुम आदि न जाने कितने ग़रीब व ग़ुलाम थे, जिन्हें उन्होंने नजात दिलाई। कैसा था हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का दया-भाव—असीम दया।

हब्श की ओर हिजरत और वापसी

जैसे-जैसे मुसलमानों की संख्या बढ़ती जा रही थी, विरोध भी बढ़ता चला गया, यहां तक कि मक्के में मुसलमानों का रहना दूभर हो गया। ऐसी स्थिति में पैग़म्बरे इस्लाम ने मुसलमानों को हब्श की ओर हिजरत (केवल ईश प्रसन्नता के लिए घर-बार, धन-दौलत छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले जाने का नाम हिजरत है) कर जाने की इजाज़त दे दी। हब्श लाल सागर के तट पर बसा अफ्रीक़ा का एक राज्य है, जिस पर उस समय एक ईसाई राजा राज करता था। वह बहुत दयालु और न्यायी था। हब्श की ओर मुसलमानों की हिजरत का जहां एक मक़सद यह था कि अपनी जानों पर खेलकर इस्लाम का प्रचार करनेवाले वे मुसलमान मक्का के बाद इस्लाम को फैलाने का मौक़ा पा सकेंगे, वहीं यह लाभ भी कुछ कम अहम

न था कि इस प्रकार कुछ मुसलमान क़ुरैश के ज़ुल्मों से छुटकारा पालेंगे और उन्हें इस्लामी कर्त्तव्यों के पूरा करने में कोई रुकावट न होगी।

हब्श को हिजरात की इजाज़त मिली और मुसलमान वहां जाना शुरू हो गए। पहली बार पंद्रह और दूसरी बार लगभग अस्सी मुसलमान हब्श के लिए रवाना हुए।

उस समय मक्के में मुसलमानों पर आज़माइशों के जो पहाड़ तोड़े जा रहे थे, उससे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बच न सके थे, बल्कि एक बार हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु, जो उन्हीं की कोशिशों से मुसलमान हो चुके थे, के चाचा नोफ़ुल बिन ख़ुवैलद ने इन दोनों को बांधकर बहुत मारा और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के खानदान ने उनकी तनिक भी मदद न की। पहुंचाई गई ऐसी पीड़ाओं से मजबूर होकर उन्होंने हिजरत का इरादा कर लिया और पैग़म्बरे इस्लाम से आज्ञा लेकर हब्श की ओर चल पड़े। पांच मंज़िल तय करके बर्क़ुलगमाद नामी स्थान पर पहुंचे थे कि क़ारा क़बीले के सरदार इब्नुद्दुग़ना से मुलाक़ात हुई। उसने देखकर आश्चर्य से पूछा—

"कहां जो रहे हो?"

"मुझे मेरी क़ौमवालों ने निकलने पर मजबूर कर दिया है," हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "अब विदेश जाकर ही अपने पालनहार का आज्ञापालन करूंगा।"

"तुम जैसा आदमी, जो बेसहारों का सहारा, दुखियों का दुख दूर करनेवाला, अतिथि-सत्कार करनेवाला, नातेदारों का ख़्याल रखनेवाला न अपने घर से निकल सकता है और न निकाला जा सकता है," इब्नुद्दुग़ना ने कहा, 'मैं तुम्हें पनाह दूंगा, मक्का को लौट चलो और स्वदेश में रहकर ही अपने पालनहार की भक्ति करो।"

इस तरह वह इब्नुद्दुग़ना के साथ मक्का वापस आए। उसने क़ुरैश में घूम-घूम कर एलान किया कि आज से अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी पनाह में हैं। ऐसे व्यक्ति को देश से नहीं निकाल देना चाहिए जो दीन-दुखियों की सहायता करता है, सगे-सम्बन्धियों से सम्बन्ध बनाए रखता है, अतिथि-सत्कार करता है और संकट काल में लोगों के काम आता है। क़ुरैश ने इब्नुद्दुग़ना की अपील को

स्वीकार तो कर लिया, पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को यह बता देने की शर्त लगा दी कि वह जब और जिस तरह मन कहे, अपने घर में नमाज़ें पढ़ें और क़ुरआन का पाठ करें, पर घर से बाहर नमाज़ पढ़ने की उन्हें इजाज़त नहीं, वरना हमको भय है कि हमारी औरतें और नवजवान उनके विचारों का शिकार हो जाएंगे।

क़ुरैश का यह भय अपनी जगह पर सही था, इसलिए कि सदा से ही सत्य में इतना आकर्षण होता है कि चुम्बक की तरह सूझ-बूझवाले जीते-जागते इन्सान को अपनी ओर खींच लेता है। सत्य की राह में लाख पांबन्दियां लगाई जाएं, उसके प्रवाह को रोकने के लिए बांध बांधे जाएं, बहरहाल वह अपने लिए रास्ता बना ही लेता है। सत्य तो उस गेंद जैसा है कि उसे जितना ही दबाया जाता है उतना ही ऊपर उछलता है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ आदि के लिए घर के आंगन में एक मस्जिद बना ली थी। अब वहीं पर वे नमाज़ें पढ़ते और क़ुरआन का पाठ करते। वे बड़े ही नम्र स्वभाव के थे। जब पढ़ते तो उससे इतना प्रभावित होते कि रोते-रोते चेहरा आंसुओं से तर हो जाता। आपकी ऐसी हालत देखकर पत्थर से पत्थर दिलवाला आदमी भी पसीजे बिना न रहता। क़ुरैश की औरतों, बच्चे, नवजवान यह दृश्य देखते तो सोचने पर मजबूर होते कि आख़िर यह क्या चीज़ है, जिसने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के मन पर इतनी गहरी छाप डाली है और फिर उसका जो नतीजा होता, वह ज़ाहिर था।

क़ुरैश के सरदार ऐसी सूरतेहाल देखकर घबरा उठे और इब्नुद्दुग़ना को बुलाकर कहा कि हमने तुम्हारी ज़मानत पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को इस शर्त पर पनाह दी थी कि वे अपने मकान में छिपकर अपने धार्मिक काम करें, पर अब तो वह आंगन में मस्जिद बनाकर खुल्लम-खुल्ला नमाज़ पढ़ते हैं, इससे हमें भय है कि हमारी औरतें और बच्चे प्रभावित होकर कहीं 'विधर्मी' न हो जाएं, इसलिए तुम उन्हें बता दो कि ऐसा करने से रुक जाएं वरना हम तुम्हें अपनी ज़मानत से आज़ाद कर देंगे।

इब्नुद्दुग़ना ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से जाकर कहा– "तुम जानते हो कि मैंने किस शर्त पर तुम्हारी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया है, या तो तुम उस पर क़ायम रहो, या मुझे ज़िम्मेदारी से आज़ाद समझो। मैं नहीं चाहता

कि मेरे बारे में अरब में यह मशहूर हो जाए कि मैंने अपना वायदा नहीं निभाया।"

"मुझे तुम्हारी पनाह की ज़रूरत नहीं, मेरे लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह काफ़ी है।" सब कुछ सुनने के बाद यह था हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का जवाब। कैसे निर्भीक थे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और कैसी भी परिस्थितियां हों, उन्हें सत्य मार्ग पर अडिग आगे बढ़ते रहना था। सच है कि एक अल्लाह और उसकी पनाह में जाने के बाद मनुष्य ऐसा ही निर्भीक व निडर हो जाता है–

वह एक सज्दा जिसे तू गरां समझता है।
हज़ार सज्दों से देता है आदमी को नजात।।

मदीने की ओर हिजरत

पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथियों की कोशिश से अब इस्लाम की आवाज़ मक्का से बाहर पहुंचने लगी थी, यहां तक कि कुछ ही दिनों में मदीना नगर इस्लामी आन्दोलन का गढ़ बन गया और वहां के लोग, मक्के में मुसलमानों के कड़े जीवन को देखकर, ऐसी इच्छा प्रकट करने लगे कि तमाम मुसलमान और पैग़म्बरे इस्लाम मदीना चले आएं तो बेहतर हो।

इधर सत्य के फैलने का अर्थ है असत्य का विनाश। ऐसा भांपकर इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में शत्रुओं ने और तेज़ी पैदा कर दी और यह तय कर लिया कि इस्लामी आन्दोलन के बढ़ते क़दम को रोक दिया जाएगा और मुसलमानों को बड़ी से बड़ी तक्लीफ़ देने में कोई कमी न की जाएगी। शत्रुओं की इस नीति से ऊबकर अन्त में मुसलमानों को हिजरत की इजाज़त दे दी गई। यह हिजरत मदीना के लिए थी। ऐसी मदीनावालों की इच्छा भी थी और इसकी भी आशा हो चली थी कि जल्द ही मदीना इस्लामी स्टेट की शक्ल अख़्तियार कर लेगा।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी शत्रुओं द्वारा पहुंचाए गए कष्टों से बचे न रहे, वे भी अत्याचार की लपेट में आ ही गए। इसी लिए उन्होंने भी मदीने की ओर हिजरत कर जाने का निश्चय कर लिया, पर पैग़म्बरे इस्लाम हजरत

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे इस में जल्दी न करने को कहा और बताया कि शायद मुझे भी जल्द ही जाना हो। आपके ऐसा करने पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा, शायद मुझे साथ ही चलने का हुक्म हो, फिर उन्होंने इसी काम के लिए दो ताक़तवर ऊंटों को पालना-पोसना भी शुरू कर दिया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कभी भी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर जाते थे, वह सुबह या शाम का समय होता। एक दिन आदत के ख़िलाफ़ दोपहर की चमचमाती धूप में आप आ गए। आपके सिर पर चादर लिपटी हुई थी। उस समय हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाल-बच्चों में बैठे हुए थे। किसी ने कहा— "अल्लाह के रसूल आ रहे हैं", वे चौंके और अनचाहे ही बोल पड़े— "इस नावक़्त में आपका आना किसी विशेष कारण से होगा" वे दरवाज़े की ओर दौड़ पड़े। आपने आते ही दरवाज़े पर पूछा, "घर में कोई परदेवाला तो नहीं है?"

"कोई दूसरा नहीं, सिर्फ़ मेरी ही दोनों लड़कियां हैं," हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा।

यह सुनकर आपने सूचना दी—

"अबू बक्र! हिजरत की इजाज़त आ गई।"

"और मेरा साथ? ऐ अल्लाह के रसूल!"

"हां, तैयार हो जाओ।"

ऐसा सुनते ही अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की आंखों में ख़ुशी के आंसू निकल आए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाह अन्हा कहती हैं कि उनको रोते देखकर ही मैंने जाना कि जब आदमी को बहुत ज़्यादा ख़ुशी होती है, उस वक़्त भी उसके आंसू निकल आते हैं। जल्दी-जल्दी तैयारीयां शुरू हो गईं, सामान बांधे जाने लगे और रात के समय चल निकलने का निश्चय कर लिया गया। उसी समय हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको उन दोनों पाले जा रहे ऊंटों में से एक ऊंट भी दे दिया, यहां तक कि तमाम प्रबन्ध पूरे हो गए और रात में यह छोटा-सा कारवां मदीने की ओर चल पड़ा, अपना घर-बार, माल-दौलत और साथी-संगी सभी कुछ उस सत्ता के भरोसे छोड़ दिया, जिसके आदेशों को लागू करना वे

ज़रूरी जानते थे और समझते थे कि लोक-परलोक की सफलता इसी में निहित है, वरन् घाटा ही घाटा है।

इस कारवां की पहली मंज़िल सौर की गुफा थी, जहां वे तीन दिन ठहरे रहे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से कह रखा था कि दिन को मक्के में जो बातें हों, रात को हमें उसकी ख़बर देते रहना। इसी तरह अपने दास आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दे दिया था कि मक्के की चरागाह में बकरियां चराएं और रात के समय गुफा के पास ले आएं। रात के समय इन्हीं बकरियों का ताज़ा दूध भोज के काम आता। सुबह में जब अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु वापस आते तो आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पद-चिह्नों पर ही बकरियां लाते, ताकि चिह्न मिट जाएं और किसी को संदेह न हो।

इधर यह व्यवस्था थी और उधर शत्रु भी अपनी कोशिशों से ग़ाफ़िल न थे। दूसरे दिन जब उन्हें अपनी साज़िश की नाकामी और 'शिकार' के भाग निकलने सरीखी अपनी असफलता साफ़ दीख पड़ने लगी तो क्रोध की ज्वाला में जलता-भुनता अबू जह्ल अपने कुछ साथियों के साथ हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर आया और उनकी बेटी हज़रत असमा से पूछा, "तेरा बाप कहां है?" उन्होंने कहा—"मुझे नहीं मालूम", इस पर उस ज़ालिम ने उनके चेहरे पर इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि कान का झूमर निकलकर दूर जा पड़ा।

लेकिन बात इतने से बननेवाली न थी, उसी समय एलान किया गया कि जो व्यक्ति मुहम्मद को गिरफ़्तार करके लाएगा, उसे सौ ऊंट पुरस्कार में दिए जाएंगे। बस फिर क्या था, इस लालच में बहुत सारे 'वीर' आपकी खोज में निकल पड़े। कोई आबादी, कोई जंगल, कोई पहाड़ और कोई रास्ता ऐसा न होगा जिसे उन्होंने छान न मारा हो, यहां तक कि कुछ लोग गुफा के पास भी पहुंच गए। उस समय हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तो अनजाने भय से तड़प उठे और बड़ी ही निराशा से बोले—

"अगर तनिक भी उन्होंने नीचे की ओर देखा तो हम देख लिए जाएंगे।"

आपने तसल्ली देते हुए कहा— "निराश न हो, हम सिर्फ़ दो नहीं हैं, एक तीसरा (अल्लाह) भी हमारे साथ है।"

ऐसा सुनते ही हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का मन शान्त हो गया और उन्हें विश्वास हो गया कि अवश्य ही अल्लाह ऐसे मौक़े पर हमारी मदद करेगा। यह उसी की तो कृपा थी कि जो शत्रु आपको खोजते-खोजते इस गुफा तक पहुंचते थे, उन्हें तनिक भी इसकी शंका न होती थी कि गुफा में भी कोई हो सकता है और वे निराश होकर चले जाते।

चौथे दिन यह कारवां फिर आगे को चला। अब इसमें दो के बजाए चार व्यक्ति थे, एक तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दास आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की बृद्धि हुई थी, ताकि उनकी सेवाएं प्राप्त की जा सकें और दूसरे अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित रज़ियल्लाहु अन्हु थे, जो गाइड (Guide) का काम कर रहे थे।

12 रबीउलअव्वल को ये लोग मदीना पहुंचे। दोपहर का वक़्त था। मदीनावालों ने चूंकि आमतौर से आपको नहीं देखा था, इसलिए वे इन दोनों को देखकर अन्तर न कर सके कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं, अदब और सम्मान की वजह से वे कोई सवाल भी नहीं कर सकते थे, यहां तक कि सूर्य सिर पर आ गया, आपके शुभ चुहरे पर धूप पड़ने लगी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठकर चादर का साया कर दिया, उस समय लोगों ने पहचाना।

हिजरत करके मदीना आनेवाले मुसलमानों का स्वागत और आदर-सत्कार मदीनावासियों ने जिस प्रकार किया, वह इतिहास का एक अमिट अंग है, इसी लिए तो उन्हें अनसार (मदद करनेवाले) का लक़ब दिया गया। मक्के से आए हुए ये मुहाजिर अपना सब कूछ छोड़कर मदीना आए थे, ऐसी स्थिति में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाई बनाने की जो रीति डाली और अनसार ने जिस तरह इसे सहर्ष स्वीकार किया, उसे मानव-इतिहास कभी भुला न सकेगा। ये भाई सगे भाइयों से भी बढ़कर एक दूसरे के साथी व हमदर्द साबित हुए, यहां तक कि एक अनसारी जब अपने मुहाजिर को भाई मान लेने के बाद घर ले गए तो उनके सामने अपना सब माल व जायदाद रख दिया और कहा, "इसमें से आधा तुम्हारा है। मेरे पास दो पत्नियां हैं, एक को तलाक़ देता हूं, इद्दत गुज़रने के बाद तुम उससे निकाह कर लेना।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ारिजा बिन ज़ैद अनसारी के भाई बनाए गए थे, इसलिए वे शुरू में उन्हीं के पास सुख से रहने लगे। जब उनका मकान मस्जिदे नबवी के पास बनकर तैयार हो गया, तो उसमें आ गए। यह मकान कच्ची ईंटों का बना था, छत खजूर की लकड़ी और पत्तों से पाट दी गई थी और केवल इतनी ऊंची थी कि आदमी हाथ उठाए तो छत से जा लगे।

मदीना में

मदीना आने के बाद मूसलमानों के कष्ट सहने और सताए जाने का युग तो समाप्त हो गया, लेकिन वहां उनकी दूसरी समस्याएं थीं— विकट परिस्थितियों से निबटना था, शत्रु के एजेण्टों और पंचगामियों से अपने को सुरक्षित करना था, इस उभरते राज्य की नींव मज़बूत करनी थी और बाहर के शत्रुओं का भी डटकर मुक़ाबला करना था जो बराबर इस कोशिश में थे कि मुसलमानों को कुचलकर रख दिया जाए। ये और ऐसी ही तमाम समस्याओं को सुलझाने में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पैग़म्बरे इस्लाम का पूरा साथ दिया और अपने बहुमूल्य सुझावों के साथ-साथ अपने चरित्र व आचरण से, अपने धन-दौलत से जिस प्रकार इस्लामी आन्दोलन के बाग़ को सींचते और उसे हरा बनाते रहे, वह अपना उदाहरण आप है।

बद्र की लड़ाई छिड़ी हुई थी, एक भयानक लड़ाई— मुट्ठी-भर निहत्थे मुसलमानों और शत्रुओं की हथियारों से लैस भारी सेना की लड़ाई— मुसलमान लड़ रहे थे और मार रहे थे। उन्होंने शत्रुओं पर धावा बोल दिया था.... अचूक धावा। शत्रुओं की सेना अपनी संख्या और अपनी शक्ति के बल पर लड़ रही थी। वे भी वार पर वार कर रहे थे। प्रतिक्षण यही भय था कि कब कौन-सा मुसलमान सेनानी शत्रु की तलवार का शिकार हो जाए, इसलिए हर व्यक्ति अपनी सुरक्षा पर भी पूरा ध्यान संजोए हुए था, पर पैग़म्बरे इस्लाम की रक्षा और देख-भाल ज़रूरी थी। आपकी घात में तो शत्रु की पूरी सेना थी ही, पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का त्याग तो देखिए, उनका आत्म-विश्वास तो दखिए, अपने नेता के नेतृत्व पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने की भावना तो देखिए, वह अपने प्राण पर खेलकर अपने नेता की सुरक्षा कर रहे थे, शत्रुओं के वार का

मुक़ाबला कर रहे थे और निडर व बेझिझक एक-एक को अपने किए का मज़ा चखा रहे थे। शत्रुओं की भारी सेना ने किस-किस के मन को दहला न दिया होगा, ले-देकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच रहे थे, जिन्हें पूरा विश्वास था कि अन्त में विजय हमारी होगी, इसलिए कि अल्लाह का यह फ़ैसला था और आपको यह मालूम था कि अन्तिम विजय सत्य की ही होती है और हम सत्य पर हैं! एक ओर पैग़म्बरे इस्लाम का यह अटूट विश्वास था कि वे लड़ाई के मैदान में जमे रहे, तनिक भी नहीं डिगे, दूसरी ओर उनके श्रद्धालुओं की निश्छल श्रद्धा देखने की चीज़ थी, ख़ास तौर से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की कि आपकी सेवा व रक्षा में तनिक भी न चूके। एक बार आपकी चादर कांधे से ढलककर नीचे आ गई कि वह तड़प उठे और तुरन्त ही उठाकर कांधे पर रख दी, फिर नारे लगाते हुए शत्रु-सेना की पंक्तियों में घुस गए।

इस लड़ाई में 70 सैनिक मुसलमानों द्वारा पकड़े गए। उस समय की रीति के अनुसार तो इनका वध ही कर दिया जाना उचित होता, पर यह था घिनौना अमानुषिक कर्म– इस्लामी नैतिकता के प्रतिकुलः आपने इस पर अमल नहीं किया, बल्कि इस सम्बन्ध में अपने साथियों से मश्विरा कर लेना ही उचित समझा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सुझाव था कि उन्हें क़त्ल ही कर दिया जाए, सैनिक दृष्टि से यही उचित भी था, पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की राय दूसरी थी। उन्होंने कहा, ये लोग अपने ही भाई-भतीजे हैं, इनका वध कैसे भी सही नहीं, इनके साथ उदारता का व्यवहार करना चाहिए और इनसे कुछ जुर्माना (फ़िदया) लेकर इन्हें छोड़ देना चाहिए। आपको हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का सुझाव ही पसन्द आया और इसी पर अमल किया गया।

उहुद की लड़ाई में

बद्र की इस लड़ाई में क़ुरैश की हार उनकी प्रतिष्ठा पर ज़बरदस्त बट्टा थी, वे इसे कैसे सहन करते, उन्होंने एक बड़ी लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उहुद की लड़ाई उनकी इन्हीं तैयारियों का नतीजा थी।

इस लड़ाई में भी शत्रुओं के मुक़ाबले में मुसलमानों की तदाद बहुत कम थी, फिर भी अपने दृढ़ विश्वास और अल्लाह पर किए गए भरोसे के कारण शुरू में

वे जीत रहे थे, पर कुछ ज़बरदस्त भूल हो जाने के बाद यह जीत हार में बदल गई, शत्रुओं ने पलटकर फिर हमला कर दिया। बहुत-से मुसलमानों के क़दम डगमगा गए, पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसी विकट स्थिति मे भी आख़िर वक़्त तक अडिग रहे– पहाड़ की तरह अविचल। स्थिति के इस तरह बदल जाने से पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कड़ी चोट आई। लोग आपको पहाड़ पर लाए, तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ में थें। अबू सुफ़ियान ने पहाड़ के क़रीब आकर पुकारा, " क्या मुहम्मद हैं?" कोई जवाब न मिला तो उसने हज़रत अबू बक्र(रज़ि०) और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लिया। इससे मालूम होता है कि शत्रु भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ही महान नेता समझते थे।

लडाई ख़त्म होने के बाद शत्रु जब वापस हो गए तो एक टुकड़ी उनका पीछा करने के लिए भेजी गई। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी उसमें शामिल थे।

फिर बाद में बद्र और उहुद की लड़ाई तक ही नहीं वे हर काम में, हर जगह पैग़म्बरे इस्लाम का साथ देते, आपकी सहायता करते, उचित सुझाव देते और हर वह काम करने को तैयार रहते, जिसका हुक्म मिलता।

आज़माइश

सन् 06 हि० की बात है। पैग़म्बरे इस्लाम एक लड़ाई जीतकर वापस आ रहे थे, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ में थे। वापसी में मदीना पहुंचने से पहले ही रात हो गई, इसलिए पूरी फ़ौज ने वहीं पड़ाव डाल दिया। हर सफ़र में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नियम यह था कि अपने साथ अपनी किसी एक पत्नी को ले लेते थे, इस बार हज़रत आइशा रज़ियल्लाह अन्हा आपके साथ थीं। सुबह के समय वह कुल्ला-फ़राग़त के लिए गईं, वापस आईं तो देखा गले का हार कहीं गिर गया है, खोजते हुए फिर उसी ओर चलीं, पर जब ढूंढकर पड़ाव पर वापस पहुंचीं तो लोग जा चुके थे, उसी जगह दुखी व परेशान बैठ गईं। इसी बीच हज़रत सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हु ने, जो बहुत बूढ़े थे और

कारवां के चल पड़ने के बाद, तमाम सामान और दूसरी चीज़ों की अच्छी तरह देख-भाल करने के बाद ही सबसे पीछे चला करते थे, हज़रत आइशा रज़ियल्लाह अन्हा को देख लिया और ऊंट पर बिठाकर मदीना आ गए।

बस बात इतनी भर थी, इसी को ले उड़े इस्लामी जमाअत में घुस आनेवाले शत्रु के एजेन्ट मुनाफ़िक़, जिनका ध्येय ही यह था कि किसी तरह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करके और उनके ख़िलाफ़ झूठा प्रोपेगण्डा करके उनकी धाक अरब जगत से ख़त्म कर दी जाए। मुनाफ़िक़ों ने इस बात का ऐसा प्रचार किया कि बेचारे कुछ भोले-भाले मुसलमान भी इस लपेट में आ गए, यहां तक कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के एक नातेदार और उन्हीं की देख-रेख में पलने वाले मिसतह बिन उसामा भी इस साज़िश का शिकार हो गए।

कैसी थी अजमाइश की यह घड़ी हज़रत आइशा के लिए, बाप अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए और दूसरे क़रीबी नातेदारों के लिए। झूठ के पर अवश्य होते हैं, पर सच्ची बात भी कभी छिपी नहीं रहती, प्रकट होकर रहती है। अल्लाह जो हर खुले-छिपे को जानने वाला है, उसने हज़रत आइशा रज़ियल्लाह अन्हा की पाकदामनी को प्रकट कर ही दिया।

इस आज़माइश की घड़ी में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाप हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को जैसा कुछ भी दुख हुआ होगा, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसी परेशानी व दुख की हालत में उन्होंने मिसतह बिन असासा के खान-पान व रहन-सहन की ज़िम्मेदारी से यह कहकर हाथ खींच लिया कि–

"खुदा की क़सम! इस द्रोह के बाद मैं उसकी ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता।"– लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की उदारता तो देखिए, उनके हृदय की कोमलता तो देखिए, उनकी भावनाएं तो निहारिए, उनके चरित्र की उच्चता पर तो नज़र डालिए, अल्लाह के प्रति उनकी भक्ति व आज्ञापालन तो देखिए कि उस पालनहार का यह हुक्म आते ही कि–

"तुममें के बड़ों और मालदारों को चाहिए कि वे अपने नातेदातों, ग़रीबों और अल्लाह की राह में हिजरत करनेवालों को (मदद न देने की क़सम न खाएं और चाहिए कि उनकी ग़लतियां) माफ़ करें, और उनसे आंख बचा जाएं। क्या

तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और अल्लाह तो बहुत बड़ा माफ़ करनेवाला और दया करने वाला है।''

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का मन द्रवित हो उठा, वे रो पड़े और दिल की पूरी गहराई से यह आवाज़ निकली—

''खुदा की क़सम! मैं चाहता हूं कि खुदा मुझे माफ़ कर दे।'' और क़सम खाई कि अब मैं कभी भी उसकी मदद से हाथ न खींचूंगा।

धन्य है बड़कपन, धन्य है ऐसी उदारता और धन्य है अपने कट्टर से कट्टर दुश्मन को भी पालनहार के हुक्म पर माफ़ कर देने की भावना!

सच्चा साथी

सन् 06 हि० में पैग़म्बरे इस्लाम ने 1400 साथियों के साथ काबे की ज़ियारत व तवाफ़ का इरादा किया। मक्का के क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि क़ुरैश ने रास्ता रोक रखा है और यह प्रतिज्ञा की है कि आपको मक्के में घुसने न देंगे। आपने ऐसा सुनते ही अपने तमाम साथियों से मश्विरा मांगा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप क़त्ल व ख़ून करने के लिए नहीं, बल्कि काबे के दर्शन के लिए ही यहां पधारे हैं, इसलिए चलिए, जो कोई बाधा डालेगा, हम उससे लड़ेंगे। उनका यह सुझाव पसन्द कर लिया गया। लोग आगे बढ़े, यहां तक कि हुदैबिया में पड़ाव डाल दिया गया और दोनों फ़रीक़ों की ओर से समझौते की बातचीत शुरू हो गई। इसी बीच यह मशहूर हो गया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, जो दूत बनाकर क़ुरैशियों के पास भेजे गए थे, शहीद कर दिए गए। ऐसा सुनकर पैग़म्बरे इस्लाम ने तमाम साथियों को जमा किया और एक-एक करके हरेक से अल्लाह की राह में लड़ने, कटने और मरने का वचन लिया, ताकि नुमाइन्दे को क़त्ल करने जैसे दूस्साहस का मज़ा चखाया जाए।

हालात नाज़ुक दौर में दाख़िल हो गए थे। मुसलमान हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल की घटना सुनकर उत्तेजित हो उठे थे। क़ुरैश ने जब ऐसी स्थिति देखी तो डरे और नर्म पड़े।

समझौते की बातचीत के लिए उरवा बिन मसऊद दूत बनकर आए। उन्होंने

बातचीत करते-करते जब यह कह दिया कि—

"मुहम्मद! खुदा की क़सम! मैं तुम्हारे साथ ऐसे चेहरे और संदिग्ध लोग पाता हूं कि वक़्त पड़ेगा तो वे सब तुम्हें छोड़कर भाग जाएंगे।" तो इतना सुनते ही आपके तमाम साथी बौखला उठे, यहां तक कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे ठंडे दिल व दिमाग़ वाले आदमी ने माथे पर बल देते हुए कहा—

"क्या हम अल्लाह के रसूल को छोड़कर भाग जाएंगे?"

उरवा ने अनजान बनकर पूछा—"यह कौन है?"

"अबू बक्र", लोगों ने कहा।

"क़सम है उस सत्ता की, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मेरे ऊपर तुम्हारा एहसान न होता तो मैं तुम्हारा कड़ाई से जवाब देता।"

फिर हुदैबिया में जो समझौता हुआ, उसमें प्रत्यक्ष रूप से यही मालूम हो रहा था कि शत्रुओं के पक्ष और हित में संधि हुई है। ऐसा देखकर अधिकतर मुसलमान तो भीतर ही भीतर घुट उठे, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी न रहा गया और उन्होंने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से आकर कहा कि शत्रुओं से इतना दबकर क्यों संधि की जा रही है? पर कैसी दृढ़ता थी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु में, उन्होंने इस मर्म को पा लिया और कहा— "हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा के रसूल हैं, इसलिए आप उनकी अवज्ञा नहीं कर सकते और वह (अल्लाह) हर वक़्त आपका मददगार है।"

इस संधि के बाद मक्कावालों की तरफ़ से कुछ इत्मीनान हुआ ते यहूदियों को उनके किए का मज़ा चखाने के लिए ख़ैबर पर मुसलमानों न धावा बोल दिया। पहले हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ही सेनापति थे, बाद में हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बना दिया गया और उन्हीं के हाथों ख़ैबर जीत लिया गया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इसी साल शाबान के महीने में बनू किलाब के दमन के लिए भेजे गए, वहां से सफलता के साथ वापस आए तो बनू फ़राज़ा की चेतावनी के लिए एक टुकड़ी के साथ भेजे गए और बहुत-से क़ैदी और माल के साथ वापस आए।

मक्का-विजय के बाद हुनैन की लड़ाई में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु

भी शामिल थे और उन्होंने बड़ी ही दृढ़ता और वीरता के साथ दुश्मनों का मुक़ाबला किया।

एक और कड़ी आज़माइश

सन् 09 हि० में मुसलमानों को एक और कड़ी आज़माइश का सामना करना पड़ा। उस समय बराबर ऐसी सूचना मिल रही थी कि रूम का सम्राट क़ैसर अरब पर हमला करना चाहता है। चूंकि यह वह समय था जबकि बराबर लड़ाइयों और झड़पों की तैयारी में बैतुलमाल (राजकोष) लगभग ख़ाली हो गया था और ऐसे ही समय में रूमी सम्राट की यह चुनौती भी स्वीकार करनी पड़ी, इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बड़ी लड़ाई की तैयारी के लिए तमाम सहाबियों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर उभारा। तमाम लोग अपनी-अपनी हैसियतों के मुताबिक़ इसमें शामिल हुए। हज़रत उस्मान पैसेवाले थे, इसलिए उन्होंने बहुत कुछ दिया, लेकिन तनिक देखिए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बलिदान और त्याग कि वे घर का पूरा सामान ही उठा लाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों पर डाल दिया।

आपने पूछा, "अपने बाल-बच्चों के लिए क्या छोड़ा है?"

"उनके लिए अल्लाह और उसका रसूल काफ़ी हैं।" यह था उनका जवाब।

बहरहाल मुसलमानों की एक बड़ी फ़ौज रूमी साम्राज्य से टक्कर लेने के लिए तबूक के पास पहुंची। लेकिन वहां पहुंचकर यह मालूम हुआ कि वह ख़बर ग़लत थी, इसी लिए सब लोग वापस आ गए।

इसी साल सन् 09 हि० में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हज के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी सौंपी और उनसे ऐसा एलान करने को कह दिया कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज न करे और न कोई नंगे होकर काबे का तवाफ़ करे।

सन् 10 हि० में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी हज के सिलसिले में मक्का गए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ में थे। इस सफ़र से वापस आने के बाद आपने एक लम्बा-चौड़ा वक्तव्य दिया, जिसमें

कहा—

"ख़ुदा ने एक बन्दे को दुनिया और आख़िरत में से किसी एक को चुनने का अधिकार दिया था, लेकिन उसने दुनिया पर आख़िरत को प्रधानता दी।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसा सुनते ही रोने लगे। लोग अचम्भे में पड़ गए, आख़िर यह रोने का कौन-सा वक़्त है, लेकिन सच तो यह है कि वे इसकी तह तक पहुंच गए थे और समझ गए थे कि बंदे से तात्पर्य स्वयं आप हैं— फिर ऐसा ही हुआ कि इसके बाद ही आप बीमार हुए, रोग बढ़ता गया, हुक्म हुआ कि हमामत का काम हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पूरा करें। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंपी गई यह ज़िम्मेदारी ऐसी थी, जिससे साफ़ झलक रहा था कि आगे भी पूरी जमाअत की इमामत (नेतृत्व) की ज़िम्मेदारी उठाने का हक़दार उनके अलावा और कोई न रहेगा और होता भी कैसे, शुरू से आख़िर तक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम-ब-क़दम चलनेवाले, इस्लाम के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देनेवाले, कठिन घड़ियों में इस्लाम के लिए ढाल बन जानेवाले, सच्ची लगन और पक्की धुनवाले अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ही रसूल के बाद इस्लाम की गाड़ी पूरी सूझ-बूझ और समझदारी के साथ सही रास्ते पर चला सकते थे।

देखिए ना, कैसी थी वह नाज़ुक घड़ी— अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का देहान्त हो चुका है, पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई है, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक-एक अदा पर क़ुरबान हो जानेवाले परवाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु पर चकित होकर रह गए हैं, कुछ तो यहां तक कहने लगे हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरे भी या नहीं, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे योद्धा व नेता नंगी तलवार खींचकर दरवाज़े पर खड़े हो गए हैं कि जिस किसी ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हो गई, उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। एक हंगामा है जो जन्म ले चुका है, भय पैदा हो गया है कि कहीं अरबों की यह जमाअत टुकड़े-टुकड़े न हो जाए, किसी बड़े बिगाड़ का शिकार न हो जाए, उभरते हुए नए इस्लामी राज्य की नींव न खोद उठे— इस नाज़ुक घड़ी में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ही हैं जिन्होंने अपना सन्तुलन न खोया और

अपने पक्के ईमान, सही अक़ीदे और शुद्ध विचार के बल पर न हालात से घबराए, न परिस्थितियों से डगमगाए और पहाड़ की तरह खड़े हो गए और अपने ख़ास अंदाज़ में पुकार-पुकारकर कहने लगे–

"अगर लोग मुहम्मद की पूजा करते थे तो इसमें शक नहीं कि वे मर गए और अगर खुदा को पूजते थे तो इसमें शक नहीं कि वह ज़िन्दा है और कभी भी न मरेगा। अल्लाह का कथन है कि–"मुहम्मद सिर्फ़ एक रसूल हैं, इनसे पहले (ऐसे ही) बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी यह बात कुछ इस प्रकार रखी कि लोग प्रभावित हुए बिना न रह सके। ख़ास तौर पर उन्होंने जो आयत पढ़ी, वह कुछ ऐसी सही जगह पर फ़िट कर दी कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के कथनानुसार हमें तो मालूम हुआ मानो यह आयत पहले कभी उतरी ही नहीं थी और आज ही उतरी है।

एक नयी समस्या

इसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्वर्गवासी हुए अभी कुछ ही घंटे हुए थे और अभी आपका कफ़न-दफ़न भी न हो सका था, हर ओर शोक की लहर दौड़ रही थी, मुहाजिर[1] और दूसरे मुसलमान मस्जिद नबवी में जमा थे कि एक व्यक्ति ने आकर बताया कि अनसार (मदीनावासी) बनू साइदा परिवार के मकान में ख़िलाफ़त (राज्य संचालन) की समस्याओं पर बातचीत करने और अपने में से ही किसी को ख़लीफ़ा (राज्य संचालक) बनाने के लिए इकट्ठा हो रहे हैं।

सच पूछिए तो यह मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) की ऐसी प्रबल साज़िश थी कि इससे इस्लाम की साख ख़त्म हो जाती, इस्लामी राज्य की नींव खुद जाती, इस्लामी जीवन-व्यवस्था तहस-नहस हो जाती और सबसे बड़ी बात यह कि पैग़म्बरे इस्लाम के पैदा होने और उनके इस्लामी आन्दोलन उठाने का उद्देश्य ही

1. अल्लाह की राह में घरबार छोड़कर मक्के से मदीना आनेवालों को मुहाजिर अर्थात 'हिजरत करनेवाला' कहा जाता है।

विफल हो जाता, जिसके लिए जान-माल की क़ुरबानियां तक दे दी गई थीं। कैसी घातक थी यह साज़िश!

बात यहां तक बढ़नेवाली थी कि मुहाजिर और अनसार एक-दूसरे का ख़ून-ख़राबा कर बैठते और इस्लाम के उस आदर्श की जड़ कट गई होती, जिसने मुसलमानों को एक दूसरे का भाई बना दिया था और उसमें ऐसा प्रेम भर दिया था कि आज तक वह प्रेम देखने को नहीं मिला। वह तो अल्लाह की कृपा थी और इस्लाम के दीप को जलते रहना था, ठीक समय पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे महान नेताओं को इस साज़िश का पता चल गया और वे दौड़ पड़े इस साज़िश का उन्मूलन करने के लिए।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊंच-नीच समझाने के बाद भी अंसार जो झुके तो इतना भर कि एक अमीर (प्रधान) हमारा हो और एक तुम्हारा। ज़ाहिर है यह सुझाव कभी भी मानने योग्य न था और मौक़ा भी न था कि इसकी कटु आलोचना की जाती और सभा में द्वेषपूर्ण वातावरण पैदा कर दिया जाता, जोड़-तोड़ की रीति डाल दी जाति, उखाड़-पछाड़ की कोशिशें की जाने लगतीं कि मन एक दूसरे से जुड़ने के बजाए कटने लगते, प्रेम-भाव पैदा होने के बजाए घृणा की भावना उग्र हो उठती और वह कूछ होता जिसे मिटाने के लिए इस्लाम आया था। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसे समय में दूरदर्शिता दिखाई और ऐसा वक्तव्य दिया कि जिसने इस्लाम की डूबती नैया को उबार लिया। उनके वक्तव्य के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

साथियो! मैं आपके कारनामों व उपकारों को झुठला नहीं सकता, पर सच पूछिए तो अरब देश के तमाम लोग क़ुरैश के सिवा किसी के नेतृत्व को मान ही नहीं समते, फिर मुहाजिरों के सबसे पहले इस्लाम अपनाने के कारण और अल्लाह के रसूल के वंश से सम्बन्ध रखने की वजह से उनके अधिकार आपसे अधिक हैं।"

फिर उन्होंने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे रहनुमाओं की ओर संकेत करते हुए कहा—

"ये लोग इस योग्य हैं कि इन्हें आप अपना नेता चुन सकते हैं, इससे

इस्लामी राज्य की बुनियादें भी मज़बूत होंगी और अरबों को भी इनके नतृत्व में चलने पर कोई आपत्ति न होगी।"

इस प्रकार जब सभी सहमत हो गए कि समय व मसलहतों के तहत मुसलमानों का प्रधान कोई क़ुरैश ही हो, तो इससे पहले कि लोग हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बताए नामों पर विचार करते, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में हाथ दे दिया, मानो उन्होंने यह एलान कर दिया कि हममें से सबसे बेहतर नेता स्वयं हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। वास्तविकता भी यही थी। भला अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे नेता की मौजूदगी में वे किसी दूसरे को अपना नेता क्यों चुनते? फिर इसका साहस ही कौन जुटा पाता कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले में आए थे और सबसे बड़ी बात यह कि अन्होंने ही पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अनुपस्थिति में इस्लामी जमाअत व संस्था का नेतृत्व किया था, ऐसे व्यक्तित्व के बारे में प्रस्ताव आते ही सर्वसम्मति से उनका नेतृत्व मान लिया गया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के यह कहते ही कि—'हम आपके हाथ पर बैअत' करते हैं, क्योंकि आप हमारे सरदार और हम लोगों से सबसे बेहतर हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपको ज़्यादा चाहते थे,' तमाम लोगों ने उन्हें अपना प्रधान मान लिया और बैअत के लिए टूट पड़े। इस तरह समय से पहले ही उस साज़िश का उन्मूलन कर दिया गया जो इस्लाम की जड़ काटने के लिए रचा गया था। फिर इसके बाद पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कफ़न-दफ़न का काम पूरा किया गया।

इन तमाम कामों से निबटने के बाद दूसरे दिन मस्जिद में आम बैअत हुई और पूरी जनता ने आपको आज्ञापालन का वचल दिया। ऐसे ही मौक़े पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों के प्रधान के रूप में जो पहला वक्तव्य दिया और जिसमें राज्य की नीतियों और कार्यक्रमों का एलान किया गया वह इन

1. इस बात का वचन कि आपके नेतृत्व में चलेंगे और इस तरह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करके लोक-परलोक दोनों को सफल बनाने को कोशिश करेंगे।

शब्दों में था–

"लोगो! मैं तुम्हारा प्रधान नियुक्त किया गया हूं, हालांकि मैं तुम लोगों में सबसे बहतर नहीं हूं। अगर मैं अच्छा काम करूं तो मेरी सहायता करो और अगर बुराई की ओर जाऊं, तो मुझे सीधा कर दो। सच्चाई अमानत है, झूठ ख़ियानत है। तुम्हारा कमज़ोर आदमी भी मेरे नज़दीक ताक़तवर है, यहां तक कि मैं असका हक़ वापस दिला दूं अगर अल्लाह ने चाहा, और तुम्हारा ताक़तवर आदमी भी मेरे नज़दीक कमज़ोर है, यहां तक कि मैं उससे दूसरों का हक़ दिला दूं अगर अल्लाह ने चाहा। जो जाति अल्लाह की राह में संघर्ष छोड़ देती है उसे अल्लाह रुसवा कर देता है और जिस जाति में दुराचार फैल जाते हैं, अल्लाह उसमें उसकी विपदाओं को भी फैला देता है।

मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करूं तो मेरा कहा मानो, लेकिन जब अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा करूं, तो तुम पर मेरा आज्ञापालन अनिवार्य नहीं।"

इस्लामी राज्य के पहले ख़लीफ़ा

किसी राज्य का ख़लीफ़ा बन जाना और उसकी ज़िम्मेदारियों को बड़े ही अच्छे ढंग से निभाना कोई आसान काम नहीं, वह भी एक ऐसे राज्य की खिलाफ़त की ज़िम्मेदारी जो अभी नया वजूद में आया था, जिसकी बाग डोर अब तक एक एसे व्यक्ति के हाथो में थी जो रसूल था, पैग़म्बर था और अपने पालनहार की ओर से जिसे क़दम-क़दम पर हिदायतें मिल रही थीं। सच तो यह है कि पैग़म्बरे इस्लाम की मृत्यु के बाद जिस तरह लोगों ने अपने होश व हवास खो दिए थे, उसमें जहां आपसे अथाह प्रेम लोगों में काम कर रहा था, वहीं एक घबराहट लोगों को इसकी भी थी– रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चले जाने के बाद रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन अनुयायियों का क्या होगा, आपके सन्देश का क्या होगा और क्या होगा उस राज्य का जो अभी वजूद में आया है? लेकिन यह हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का धैर्य था, यह उन्हीं का साहस था कि उन्होंने तमाम उठती और पैदा होती समस्याओं को इस तरह हल कर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिद्धांतों और

पालीसियों के सहारे इस्लामी राज्य की उखड़ता नींव को इतना दृढ़ बना दिया कि एक मुद्दत तक इस्लामी राज्य की इमारत में दराड़ तक न पड़ सकी।

कैसी-कैसी समस्याएं थीं, कितनी कठिनाइयों और संकटों का सामना था जिससे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दोचार होना था। एक ओर नुबूवत के झूठे दावेदारों से निपटना था, दूसरी ओर इस्लाम से विमुख विधर्मियों का बल तोड़ना था, तीसरी ओर एक गिरोह ने देने से इंकार करके राज्य को दीवालिया करना चाहा, उन्हें समझाना था, चौथी और शाम (सीरिया) राज्य की शक्ति का मुक़ाबला था जिसके लिए उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के नुतृत्व में सेना भेजनी थी, और एसी ही छोटी-बड़ी समस्याएं उनके ख़लीफ़ा होते ही पैदा हो गई थीं जिन्हें पूरी दूरदर्शिता के साथ हल करना था।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन समस्याओं को कैसे हल किया, उसका विवरण आगे आ रहा है।

हज़रत उसामा की रवानगी

इन्तिक़ाल से पहले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूमियों के मुक़ाबले के लिए एक सेना को भेजने का हुक्म दिय था, जिसके सेनापति हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। इस सेना में मदीना और मदीना के आसपास के 700 सैनिक शरीक थे, लेकिन पैग़म्बरे इस्लाम की बीमारी के बढ़ जाने और फिर इन्तिक़ाल की वजह से यह सेना भेजी न जा सकी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा होते ही सबसे पहला काम यही किया कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना को रवानगी का हुक्म दे दिया। अभी सेना जमा हो रही थी और रवाना होने ही वाली थी कि अरबों के इस्लाम से विमुख होने और यहूदियों और ईसाइयों की साज़िशों की ख़बरें आने लगीं। ऐसी ख़बरें सुन-सुनकर मुसलमानों में खलबली-सी मच गई। एक तो प्रिय नेता की मृत्यु, दूसरे अरब मुसलमानों की विधर्मिता, तीसरे यहूदियों व ईसाइयों की साज़िश, फिर यह कि मुसलमानों की कमी और शत्रुओं की ज़्यादती– इन तमाम चीज़ों ने मिल-मिलाकर मुसलामनों के होश ही गुम कर दिए। मुसलमानों की हालत तो उस वक़्त उन बकरियों जैसी थी जो जाड़े की ठंडी और बर्फ़ीली रातों में मैदान

में बिना किसी चरवाहे या मालिक के पड़ी हों। ऐसी स्थितिमें सहाबियों ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पूरी निष्ठा के साथ यह सुझाव दिया कि जो लोग उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना में जा रहे हैं, वे मुसलामनों के चुने हुए लोग हैं, अरब के हालात आपके सामने हैं, ऐसी स्थिति में मुसलामनों को अलग भेज देना कुछ उचित नहीं दीख पड़ता, लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का जवाब तो देखिए, कैसी दृढ़ता है उनमें! कठिनाइयों से न घबराने वाला कैसा साहस है उनमें! और सबसे बड़ी बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति कितनी अथाह श्रद्धा है उनमें! उन्होंने कहा–

"क़सम है उस सत्ता की, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मुझे यह मालूम हो कि हिंसक पशु मुझे उठा ले जाएंगे, तो भी मैं रसूलुल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिए उसामा की सेना ज़रूर भेजता। अगर आबादियों में मेरे अलावा एक व्यक्ति भी बाक़ी न बचता, तो भी मैं उस सेना की रवानगी का हुक्म ज़रूर देता।"

ज़ाहिर है ख़लीफ़ा के हुक्म को कौन टालता। सेना जुर्फ़ के पड़ाव पर जमा हो गई। उन्होंने ख़लीफ़ा के पास हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बानी यह संदेश भेजा कि मुझे भय है कि मेरी रवानगी के बाद दुश्मन मदीने पर धावा बोल देंगे, इसलिए अगर आप कहें तो सेना लेकर मदीना चला आऊं। इसी के साथ अनसार ने भी कहला भेजा कि आपको जब सेना भेजनी ही है तो उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के बजाए, जो उस समय केवल 19 साल के थे, किसी बड़े-बूढ़े को सेनापति बनाइए। लेकिन स्पष्ट है कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु परिस्थितियों से घबरानेवाले न थे। पहली बात का जवाब तो ऊपर जैसा ही दिया लेकिन दूसरी बात पर तो वे मारे ग़ुस्से के सुर्ख़ हो गए। खड़े हो गए और कहा–

"तुम्हें मौत आए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसामा को सेनापति बनाया था, तुम मुझे सुझाव देते हो कि मैं उसे वहां से हटा दूं।"

इस जवाब के बाद वह जुर्फ़ के पड़ाव पर ख़ुद गए और सेना को जो हिदायतें दीं हैं उससे उनके उच्च चरित्र का आसानी के साथ अन्दाज़ा किया जा सकता है–

"ऐ लोगो! खड़े हो जाओ, मैं तुम्हें दस चीज़ों का हुक्म देता हूं। उन्हें मेरी ओर से अच्छी तरह याद रखना—

1. ख़ियानत न करना,

2. धोखा न देना,

3. सेनापति की अवज्ञा न करना,

4. किसी व्यक्ति का कोई अंग न काटना,

5. किसी बच्चे, बूढ़े या औरत को क़त्ल न करना,

6. खजूर या किसी और फलदार पेड़ को न काटना, न जलाना,

7. बकरी, गाय या ऊंट को खाने के अलावा किसी और ज़रूरत से न मारना,

8. तुम्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो पूजाघरों में एकान्त बैठे होंगे, उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना,

9. तुम्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो तुम्हारे पास भांति-भांति के खाने बरतनों में रखकर लाएंगे, जब तुम इन खानों को एक-एक करके खाओ, तो अल्लाह का नाम लेते जाना,

10. तुम्हें एसी जाति मिलेगी जिसके सिर के बाल बीच में मुंडे होंगे और पट्ठे छूटे होंगे, उसको कोड़ों की सज़ा देना।

अल्लाह का नाम लेकर कूच करो। अल्लाह तुम्हें दुश्मन के हथियारों और ताऊन (प्लेग) के हमले से बचाए।

यह सेना पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के ठीक 19 दिन बाद मदीने से रवाना हुई थी और दो महीने के भीतर अपना काम कके वापस आ गई। इसके भेजने से और जो फ़ायदे हुए, वे तो हुए ही, एक सबसे बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि अरब के दूसरे क़बीलों मे मुसलमानों की बिगड़ती हुई साख फिर जम गई और ऐसा समझा जाने लगा कि मुसलमान अब भी शक्तिशाली हैं, अगर उनके पास शक्ति न होती तो वे इस सेना को मदीने से बाहर क्यों भेजते।

नुबूवत (ईशदूतत्व) के झूठे दावेदार

पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के जीवन-काल में नुबूवत के कुछ झूठे दावेदार पैदा हो चुके थे। मुसैलमा ने सन् 10 हि० ही से नुबूवत का दावा किया था और आपको लिखा था कि मैं आपके साथ नुबूवत में शरीक हूं, आधा संसार आपका है, आधा मेरा। आपने इसके जवाब में लिखा–

"अल्लाह के रसूल मुहम्मद की ओर से सबसे बड़े झूठे मुसैलमा के नाम! दुनिया अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहेगा उसका वारिस बनाएगा, और अच्छा अंजाम तो परहेज़गार (संयमी) लोगों के लिए है।"

इसी तरह आप के समय में ही और भी बहुत-से नुबूवत के झूठे दावेदार पैदा हो गए थे और दिन-ब-दिन उनकी ताक़त बढ़ती ही जा रही थी। तुलैहा बिन ख़ुवैलद ने अपने इलाक़े में नुबूवत का दावा किया तो क़बीला बनू ग़तफ़ान उसकी मदद पर तैयार हो गया और उवैना बिन हसन फ़िज़ारी उसका सरदार था। ऐसे ही असवद उनसी ने यमन में और मुसैलमा बिन हसीब ने यमामा में नुबूवत का दावा किया। मर्द तो मर्द ही थे, न जाने कहां से उस समय नबी बनने का ऐसा "पागलपन" सवार हो गया था कि औरतें भी नुबूवत का दावा करने लगी थीं। सजाह बिन्त हारिस ने बड़ी धूम से अपनी नुबूवत का डंका पीटा और अशअस बिन क़ैस उसका सबसे बड़ा समर्थक था। सजाह ने आख़िर में अपनी ताक़त मज़बूत करने के लिए मुसैलमा से ब्याह भी कर लिया था।

इस फैलते हुए रोग को जड़ से उखाड़ फेंकने की कितनी बड़ी ज़रूरत थी इसका अन्दाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इससे चूक जाते यह सम्भव न था, अतएव उन्होंने ख़ासतौर पर इधर ध्यान दिया और सहाबियों से मश्विरा किया कि इस काम के लिए अधिक उचित व्यक्ति कौन होगा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को इस काम के लिए चुना गया। इसलिए वे सन् 11 हि० में हज़रत साबित बिन क़ैस अनसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुहाजिरों और अनसार की एक टोली लेकर नुबूवत के दावेदारों का उन्मूलन करने के लिए निकल खड़े हुए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबसे पहले तुलैहा की जमाअत पर हमला किया। उसके अनुयायियों को क़त्ल कर दिया और उवैना बिन हसन को पकड़वाकर 30 क़ैदियों के साथ मदीना भेजा। उवैना बिन हसन ने मदीना पहुंचकर इस्लाम ग्रहण कर लिया, पर तुलैहा सीरिया की ओर भाग गया और वहां से क्षमा याचना के लिए दो छंद लिखकर भेजे और इस्लाम को फिर से अपनाकर ईमानवालों में दाख़िल हो गया।

झूठे मुसैलमा के उन्मूलन के लिए हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु भेजे गए और इससे पहले कि वह हमले की तैयारियां करें, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनकी मदद के लिए पहुंच गए। उन्होंने मुआजा को हरा दिया। इसके बाद खुद मुसैलमा से मुक़ाबला हुआ। मुसैलमा ने अपने साथियों को लेकर बड़े घमासान की लड़ाई लड़ी और मुसलमानों की बड़ी संख्या उसमें मारी गई, जिसमें बहुत-से तो क़ुरआन के हाफ़िज़ भी थे, पर आख़िर में जीत मुसलमानों ही की रही और झूठा मुसैलमा हज़रत वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों मारा गया। मुसैलमा की पत्नी सजाह जो स्वयं नुबूवत की दावेदार थी, भागकर बसरा पहुंची और कुछ दिनों के बाद मर गई।

इसी तरह असवद अनसी को फ़ैस बिन मक़शूह रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़ीरोज़ वैलमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नशे की हालत में क़त्ल कर दिया।

एक ओर तो नुबूवत के ये दावेदार थे, दूसरी ओर अरब क़बीलों के बहुत-से सरदार ऐसे भी थे जो इस्लाम से विमुख हो गए और अपने-अपने हलक़ों के सरदार बन बैठे। नोमान बिन मुनज़िर ने बहरैन में सिर उठाया, लक़ीत बिन मालिक न उमान में द्रोह कर दिया। ऐसे ही कुंदा के इलाक़े में भी बहुत-से इस्लाम के इंकारी पैदा हो गए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने नुबूवत के इन झूठे दावेदारों से निमटकर ऐसे लोगों की ओर ध्यान दिया जो विद्रोह पर तुले बैठे थे। अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरैन भेजकर नोमान बिन मुनज़िर का ख़ात्मा कराया, हुज़ैफ़ा बिन मुह्सिन रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार से लक़ीत बिन मालिक को क़त्ल करा के उमान की भूमि को शुद्ध किया और ज़ियाद बिन लुबैद रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा कुन्दा के विधर्मियों का उन्मूलन किया।

ज़कात के इंकारियों को चेतावनी

नुबूवत के झूठे दावेदारों और इस्लाम से विमुख हानेवालों के अलावा उसी समय एक ऐसा गिरोह भी पैदा हो गया था जो ज़कात का इंकार कर रहा था, चूंकि यसह गिरोह उपने को मुसलमान कहता था और ज़कात देने से इंकार कर रहा था, इसलिए इसके ख़िलाफ़ तलवार उठाने के बारे में स्वयं मुस्लिम नेताओं में मतभेद हो गया। इस मतभेद का अन्दाज़ा आप इसी से कर सकते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे दृढ़ निश्चयी लोगों ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप एक ऐसे गिरोह के ख़िलाफ़ कैसे लड़ाई लड़ सकते हैं जो अल्लाह को एक मानता है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल समझता है, बस ज़कात देने से उसे इंकार है, लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का दृढ़ ईमान अपनी जगह से डिग न सका और उन्होंने साफ़ कह दिया—

"ख़ुदा की क़सम! अगर बकरी का एक बच्चा भी, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिया जाता था, कोई देने से इंकार करेगा, तो मैं उसके ख़िलाफ़ जिहाद करूंगा।"

इस कड़ी पालिसी का नतीजा यह हुआ कि थोड़ी-सी चेतावनी के बाद ज़कात के इंकारी ख़ुद ही ज़कात लेकर उनके पास हाज़िर हुए और फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की दूरदर्शिता माननी पड़ी।

क़ुरआन का संकलन

यह बात सभी जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क़ुरआन मजीद थोड़ा-थोड़ा करके 23 वर्ष तक बराबर उतरता रहा। बहुत-से सहाबी ऐसे थे जिन्हें पूरा क़ुरआन ज़बानी याद था और ऐसे सहाबियों की संख्या तो और भी अधिक थी, जिन्हें क़ुरआन के बहुत-से हिस्से याद थे।

नुबूवत के झूठे दावेदारों, इस्लाम से विमुख होनेवालों और ज़कात के इन्कारियों से जब मुसलमानों को दो-चार होना पड़ा तो इन लड़ाइयों और झड़पों

में क़ुरआन के बहुत से हाफ़िज़ शहीद हो गए, ख़ास तौर पर यमामा की घमासान लड़ाइयों में इतने हाफ़िज़ काम आए कि हज़रत अमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भय होने लगा कि सहाबियों के शहीद होने का ऐसा ही सिलसिला चलता रहा, तो क़ुरआन मजीद का बहुत बड़ा भाग नष्ट हो जाएगा, ऐसा सोचकर उन्होंने पहले ख़लीफ़ा को क़ुरआन मजीद जमा करने और संकलित करने पर उकसाया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु शुरू में इस पर तैयार न थे, कहते कि जिस काम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया है, उसे मैं कैसे करूं। लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बार-बार इस पर उभारते रहे और बताते रहे कि इसका महत्त्व बहुत है। उनके बार-बार कहते रहने पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मन में भी यह बात आ गई और उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को जो पैग़म्बरे इस्लाम के समय में वह्य लिखा करते थे, क़ुरआन मजीद के जमा करने का हुक्म दे दिया। पहले वे भी ऐसा करने से झिझके, पर फिर बाद में इस की मस्लहत समझ में आ गई और बड़ी कोशिश व देखभाल के बाद तमाम बिखरे हुए भागों को जमा करके एक पुस्तक के रूप में संकलित कर दिया।

यहां किसी को ऐसी ग़ुलतफ़हमी न होनी चाहिए कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन को जमा करके उसे जो संकलित किया है, उसका अर्थ यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में क़ुरआन मजीद की आयतों और सूरतों में कोई क्रम न था और न ही सूरतों के नाम रखे गए थे, यह सब कुछ व्यवस्थित रूप से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के समय ही में हुआ, ऐसा समझना वास्तव में बहुत बड़ी भूल है। सच तो यह है कि क़ुरआन की आयतों में क्रम, सूरतों के नाम आदि सभी काम पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी निगरानी में कराए हैं और आपने क़ुरआन को एक क्रमवार व्यवस्थित पुस्तक के रूप में छोड़ा है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का करनामा तो बस इतना ही है कि उनहोंने बिखरे टुकड़ों और अलग-अलग चमड़ों आदि पर लिखे गए हिस्सों को जमा करके एक संकलित ग्रन्थ बना दिया, इसी को "सहीफ़ा सिद्दीक़" या "मसहफ़े सिद्दीक़" भी कहते हैं, अर्थात् हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की संकलित पुस्तक।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा लिखी गई यह प्रति हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ज़ाने में सुरक्षित रही, इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ब्ज़े में आई। हज़रत उमर ने इसे हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास रखवा दिया और वसीयत की कि किसी को न दें, हां, जिसे नक़ल करना हो या अपनी प्रति ठीक करनी हो, वह इससे लाभ उठा सकता है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के समय में इसी की मदद से कुछ प्रतियां लिखवाई थीं और दूसरी जगहों पर भेजी थीं। जब मरवान मदीने का गवर्नर बनकर आया तो उसने इस प्रति को हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हु से लेना चाहा, लेकिन उन्होंने देने से इंकार कर दिया और मरते दम तक अपने पास रखे रहीं। उनकी मृत्यु के बाद मरवान ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से लेकर उसे नष्ट कर दिया।

ईरान, रूम और इस्लाम

किसी भी राज्य की समस्याएं दो प्रकार की हुआ करती हैं, एक तो उसकी अपनी अन्दरूनी समस्याएं, दूसरी उसकी बाह्य या अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं।

राज्य की अन्दरूनी समस्याओं के सम्बन्ध में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कितने सतर्क थे, इसका अन्दाज़ा पिछले पृष्ठों के पढ़ने के बाद किया जा सकता है। रहीं उसकी बाह्य समस्याएं, तो इस ओर से भी यह जागरूक ख़लीफ़ा कुछ कम सतर्क न था। अपने राज्य की साख बनाए रखने, बाहरी दुश्मनों से देश की रक्षा करने, साथ ही इस्लाम का पवित्र सन्देश दूसरे राज्यों तक पहुंचाने के लिए हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कोशिशें की हैं, वे थोड़ी मुद्दत में और उस वक़्त के हालात को देखते हुए कुछ कम सराहनीय नहीं हैं।

बेहतर है, इस सिलसिले की कोशिशों के विस्तार में जाने से पहले उस समय की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर भी एक नज़र डाल ली जाए।

उस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दो बड़े साम्राज्यों का ही बोलबाला था।

एक था ईरानी साम्राज्य, और

दूसरा था रूमी साम्राज्य।

ईरानी साम्राज्य

ईरानी राज्य बहुत ही पुराना राज्य था, संस्कृति व सभ्यता के अनुसार भी बहुत पुराना। किसी विदेशी को ईरान पर शासन करने का कोई मौक़ा ही नहीं मिला। सिकन्दर रूमी ने दारा को हराकर कुछ मुद्दत के लिए ईरान पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर लिया, पर यह क़ब्ज़ा ज़्यादा दिनों तक बाक़ी न रह सका। उस समय अफ़ग़ानिस्तान व इराक़ भी ईरानी राज्य में शामिल थे। यहां के शासक की हैसियत "शहनशाह" (सम्राट) की थी और सूबों के गवर्नरों को, जो अन्दरूनी मामलों में आज़ाद होते थे, "बादशाह" कहा जाता था। शहनशाह को किसरा की उपाधि भी मिली हुई थी।

ईरान के आख़िरी ज़माने में 'सासानी वंश' राज्य करता था। इस वंश की बुनियाद उर्दशेर बाबकान ने 230 ई० में डाली थी। सासानी वंश की राजधानी 'मदायन' शहर था जो दजला के पूर्वी व पश्चिमी किनारों पर आबाद था। पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म के समय सासानी वंश का प्रसिद्ध न्यायी बादशाह किसरा नौशेरवां शासन कर रहा था। किसरा नौशेरवां के बाद उसका बेटा हुरमुज़ सिंहासन पर बैठा, हुरमुज़ के बाद किसरा परवेज़ को उसके बेटे शेरवैह ने क़त्ल कर दिया और वह ख़ुद बादशाह बन बैठा। शेरवैह ने 1 साल 9 महीने तक शासन किया और इस थोड़ी सी मुद्दत में अपने परिवारवालों को तरह-तरह की पीड़ाएं दीं। अन्त में उसे मार डाला गया। उसके बाद उसका बेटा उर्दशेर राजगद्दी पर बिठाया गया। उम्र में छोटे होने की वजह से एक अधिकारी को उसका परामर्शदाता बनाया गया, पर यह इन्तिज़ाम एक दूसरे अधिकारी शहरबज़ार शा को पसन्द न आया। शहरबज़ार ने मदायन पर चढ़ाई करके बादशाह को क़त्ल कर दिया और ख़ुद बादशाह बन बैठा। शहरबज़ार चूंकि शाही पहरवार से न था, इसलिए 40 दिन की हुकूमत के बाद वह भी क़त्ल कर दिया गया। अब किसरा परवेज़ की बेटी बोरान दुख़्त के सिर पर ताज रखा गया। पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आख़िरी वक़्त में यही ईरान पर शासन कर रही थी। एक साल चार महीने हुकूमत करने के बाद यह भी मर गई। बोरान दुख़्त के बाद किसरा परवेज़ के चचेरे भाई जवांशेर को तख़्त पर बिठाया

गया, पर वह भी एक महीने से ज़्यादा न रह सका। इसके बाद किसरा परवेज़ की दूसरी बहन अज़रमी दुख़्त सत्तारूढ़ हो गई, पर उसे एक ईरानी सेनापति रुस्तम ने अपने बाप के बदले में क़त्ल कर दिया और उसकी जगह उर्दशेर बाबकान के वंश में से किसरा बिन मेहर को पदासीन किया गया, पर यह कुछ दिनों से ज़्यादा न रहा और आख़िर में यज़्दगुर्द बिन शहरयार को ईरानी राज्य का सम्राट चुना गया, जो इस ज़ंजीर की आख़िरी कड़ी थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में ईरान का यह विस्तृत साम्राज्य उसके हाथ से निकलकर इस्लामी राज्य का अंग बन गया।

रूमी साम्राज्य

सिकन्दर यूनानी के विश्वव्यापी राज्य के बाद यूरोप में जो दूसरा बड़ा राज्य स्थापित हुआ, वह रूमियों का था। इसकी राजधानी "रूमा" शहर था। एक वह समय था कि जब भारत, ईरान, चीन और तुर्किस्तान को छोड़कर पूरा संसार रूमी साम्राज्य का एक अंग था और जिसे "दी ग्रेट रोमन एम्पायर" के नाम से याद किया जाता था, लेकिन कुछ दिनों के बाद सन् 395 ई० में आपसी लड़ाइयों की वजह से रूमी राज्य के दो टुकड़े हो गए– पूर्वी रूम और और पश्चिमी रूम। पश्चिमी रूम की राजधानी "रूमा" रही और पूर्वी रूम की राजधानी "क़ुस्तुन्तुनिया" नगर हुआ। पश्चिमी रूमी राज्य पर यूरोप और रूस की जंगली जातियों ने बार-बार हमले किए और अन्त में वह कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, पर पूर्वी रूमी राज्य इन हमलों से बचा रहा और बराबर तरक़्क़ी करता रहा। इस राज्य में यूरोप के कुछ भाग के अलावा एशिया माइनर, सीरिया और मिस्र भी शामिल थे।

इस्लाम के शुरू में रूमी साम्राज्य का शासक "हिरक़्ल" था। यह पहले "अफ़्रीक़ा" का गवर्नर था। सन् 610 ई० में उसने क़ैसर[1] "ख़ूका" को क़त्ल कर दिया और सिंहासन पर विराजमान हो गया। क़ैसर हिरक़्ल का शासन-काल सन् 600 से 641 ई० तक रहा।

---

1. क़ैसर रूमी सम्राटों की उपाधि थी।

उस समय के ये थे दो बड़े साम्राज्य और ख़ास बात यह है कि दोनों में विस्तारवादी और साम्राज्यवादी मनोवृत्ति पाई जाती थी, इसलिए वे एक दूसरे से भी लड़ते रहते थे। ये लड़ाइयां सरहदों पर सीरिया और इराक़ के इलाक़ों में होती रहतीं। इन में कभी ईरानी जीतते ओर कभी रूमी।

इस्लाम आने से कुछ ही दिन पहले किसरा नौशेरवां और क़ैसर ख़ूका की सेनाओं में एक लम्बी लड़ाई हुई थी। इस लड़ाई में ईरानियों की लगातार विजय होती रही। उन्होंने रूमियों को "ज़ंजीरा" से निकाल दिया और 'फ़ीनीकिया' और पलस्टाइन का नाश करते हुए वास्फ़ारस के तटों तक पहुंच गए, इसके बाद ईरानियों ने हिरक़्ल के समय में रूमियों पर दोबारा हमला किया और बैतुल्मक़्दिस का विनाश करके सलीब ;ब्तवेद्ध की लकड़ी छीन लाए। फिर इसके बाद मिस्र पर चढ़ाई की और स्कन्दरिया को जीत लिया।

फिर कुछ ही सालों के बाद सन् 622 ई० में हिरक़्ल ने ईरानियों पर भारी हमला किया और मार्च सन् 624 ई० में ठीक उस समय, जबकि मुसलमान बद्र के मैदान में अरब के मुश्रिकों पर विजयी होने की ख़ुशियां मना रहे थे, रूमी ईरानियों पर विजय-पताका फहरा रहे थे। रूमियों की इस विजय के बाद सन् 628 ई० में शेरवह ने क़ैसर हिरक़्ल से सन्धि कर ली, तमाम रूमी क़ैदियों को छोड़ दिया और सलीब ;ब्तवेद्ध की लकड़ी वापस कर दी।

ईरानी हों या रूमी, दोनों को फ़ायदा इसमें था कि अरब जैसी वीर जाति सैकड़ों टोलियों में बंटी रहे और आपस ही में टकरा-टकराकर अपनी शक्ति क्षीण करती रहे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ा पर्वत की चोटियों से सत्य की आवाज़ उठाई और पूरी दुनिया को एक घराना बनने और आपस में प्रेम-व्यवहार करने की ओर लोगों को बुलाया तो उन्होंने इस नए आन्दोलन को शक की निगाह से देखा और ऐसा महसूस किया मानो इस्लाम की यह बढ़ती हुई ताक़त एक न एक दिन उनके राज्य तक पहुंचकर रहेगी और उन्हें परास्त होना पड़ेगा। ऐसा सोचते ही उनके मन विद्वेष से भर उठे। यही कारण है कि जब सन् 6 हि०[1] में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसरा परवेज़ को पत्र

1. सन् हिजरी का आरम्भ हिजरत के साथ हुआ है।

भेजा तो उसने आव देखा, न ताव, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए और अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को हुक्म दिया कि अरब में जिस व्यक्ति ने नबी होने का दावा किया है उसे गिरफ़्तार करके मेरे पास भेज दो। बाज़ान ने शहनशाह के हुक्म की तामील में दो आदमी मदीना भेजे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन आदमियों से कहा, "जाओ तुम्हारा शहनशाह, जिसने मेरी गिरफ़्तारी का हुक्म दिया था, क़त्ल कर दिया गया। याद रखो, मेरा धर्म वहां तक विजयी होकर पहुंचेगा, जहां तक तुम्हारे किसरा का राज्य है, बल्कि जहां तक कोई ऊंट या घोड़ा पहुंच सकता है।"

बाज़ान के आदमी यह जवाब सुनकर लौट आए। यहां आकर मालूम हुआ कि पैग़म्बरे इस्लाम ने जो कुछ कहा था, बिल्कुल सही था। किसरा परवेज़ को उसके बेटे शेरवैह ने क़त्ल कर दिया था और बाज़ान को सन्देश भेजा था कि मेरे बाप ने हिजाज़ से जिन साहब को बुलाया था, उनसे छेड़ख़ानी न की जाए। इसके बाद ईरान में भीतरी झगड़े इतनी जड़ पकड़ गए कि फिर किसी को अरब की ओर ध्यान देने का मौक़ा न मिला।

ऐसे ही उसी साल जब पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूम के क़ैसर को बैतुलमक़्दिस में इस्लामी सन्देश का पत्र भेजा तो राज्याधिकारियों, मन्त्रियों और दूसरे सेनानियों ने घोर विरोध के साथ उसे रद्द कर दिया और जब इस्लामी दूत लौटने लगे तो सीरिया के ईसाइयों ने उनका माल व असबाब लूट लिया।

शुरहबील, जो रूमियों की ओर से "बसरा" का गवर्नर था, पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके पास पत्र भेजा। उस निष्ठुर ने न सिर्फ़ यह कि इस्लामी सन्देश को मानने से इंकार कर दिया, बल्कि आप के दूत "हाफ़िज़ बिन उमैर" को क़त्ल कर डाला।

सन् 09 हि० में बसरा के गवर्नर ने रूम के क़ैसर की मदद के लिए मदीने पर हमले की तैयारियां कीं, पर जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद ही अपने 30,000 योद्धाओं के साथ, ईसाइयों से मुक़ाबले के लिए तबूक पहुंचे, तो उनकी हिम्मतें टूट गईं और वे मुक़ाबला करने का साहस न जुटा सके।

यह थी वह वस्तुस्थिति जिससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि इस्लामी

राज्य के ये दोनों साम्राज्य कितने घोर शत्रु थे और इनकी ओर से सन्तोष करके बैठना कुछ कम ख़तरनाक बात न थी। वे जिस समय भी मौक़ा पाएंगे हमला कर बैठेंगे, ऐसा भय मुसलमानों को हर समय रहता था।

इराक़ पर हमला

हम लिख चुके हैं कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा बनने के बाद जो सबसे पहला काम किया वह यही था कि तत्काल उभरती समस्याओं को हल किया। उधर से निबटने के बाद उनका ध्यान इन दोनों साम्राज्यों की ओर गया। अभी वे ईरानियों के अत्याचारों से मुसलमानों को मुक्त कराने की योजना बना ही रहे थे कि इसी बीच हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु इराक़ से मदीना आए और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा—

"अगर आप मुझे क़बीले का प्रधान (अमीर) बना दें, तो मैं मुसलमानों को उन ईरानवासियों की शरारतों से बचा सकता हूं जो मेरी सरहद पर हैं।"

हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात मंज़ूर कर ली गई और उन्होंने वापस जाकर ईरानियों से झड़पें शुरू कर दीं, इस तरह बड़ी हद तक उधर के अत्याचारों में कमी हो गई। लेकिन इतने ही से काम चलने वाला न था, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उन्हें 10,000 सेना के साथ ईरानियों के मुक़ाबले के लिए रवाना किया। इस सेना के अलावा 8,000 सिपाही हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु और उन चार सरदारों के पास भेजे जो पहले से ईरानियों के मुक़ाबले में लड़ रहे थे। इस तरह कुल 18,000 सेना इराक़ के मुक़ाबले में आगे बढ़ी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को यह हिदायत थी कि इराक़ के निचले हिस्से से बढ़कर सबसे पहले उबल्ला पर हमला करें। यह जगह लगभग वही थी जहां अब बसरा आबाद है दूसरी टुकड़ी को हिदायत थी कि इराक़ के ऊपरी हिस्से से हमला करे और दोनों टुकड़ियां जीतती हुई हीरा पर आकर मिल जाएं और उक्त नगर पर एक साथ हमला करें। जिस टुकड़ी का प्रधान वहां पहले पहुंचेगा वही सेनापति होगा। जब हीरा पर विजय प्राप्त हो जाए तो सेना का एक हिस्सा वहां रुककर पीछे के हमले का बचाव करे और दूसरा हिस्सा ईरान की राजधानी मदायन पर चढ़े। हज़रत ख़ालिद

रज़ियल्लाहु अन्हु को यह भी हिदायत थी कि खेती करनेवाली जनता को परेशान न होने दें, उन्हें पूरी शान्ति के साथ ज़मीन पर क़ाबिज़ रहने दें और किसी तरह का भी कष्ट न पहुंचाएं। मुक़ाबला केवल उन लोगों से किया जाए जो मैदान में आकर लड़ें।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की टुकड़ी सन् 12 हि० में रवाना हुई। सबसे पहले उबल्ला की ओर रुख़ किया। यह ईरान के बन्दरगाहों में सबसे अधिक और सुरक्षित बन्दरगाह थी। हुरमुज़ ईरानी राज्य के पहले दर्जे के गवर्नरों में से था, जिसकी निशानी यह थी कि वह लाख रुपये की क़ीमत का ताज पहनता था। लड़ाई से पहले हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुरमुज़ के नाम एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने इस्लाम की सत्यता, न्याय-मार्ग अपनाने आदि के बारे में लिखा। हुरमुज़ ने यह पत्र पढ़कर किसरा और उसके उत्तरधिकारी को सूचना दी। फिर कुछ ही दिनों में वह बड़ी तेज़ी के साथ "उड़ना, कम्पो" लेकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले में चला, सबसे पहले काज़िम पहुंचा। मालूम हुआ कि मुसलमान हफ़ीर में हैं, वहां पहुंचा तो इस्लामी सेना के सेनापति ने काज़िम पर अपना पड़ाव डाल दिया। इस दौड़-भाग में ईरानी सेना काफ़ी थक-थका गई। काज़िम के पड़ाव पर ईरानी सेना पानी के किनारे ठहरी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु हुरमुज़ की ख़बर सुनकर मुक़ाबले पर आए। लड़ाई शुरू हो जाने पर हुरमुज़ ने धोखा देने के लिए घात के मौक़े पर कुछ आदमियों को छिपाकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने मुक़ाबले पर बुलाया। वे जैसे ही पहुंचे, वैसे ही आदमियों ने पहुंचकर उनपर वार किया, हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका वार ख़ाली कर दिया और पूरी वीरता के साथ हुरमुज़ पर हमला करके उसे क़त्ल क़र डाला। हुरमुज़ के क़त्ल के बाद तो और भी अधिक घमासान की लड़ाई हुई। अन्त में ईरानी सेना परास्त हुई। मुसलमान विजयी हो गए। विजय की यह ख़बर मदीना पहुंची तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुरमुज़ का ताज हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को दिला दिया।

हफ़ीर की लड़ाई के बाद मदार की लड़ाई हुई जो पहले से भी ज़्यादा घमासान की थी। किसरा के हुक्म से नई-नई टुकड़ियां मदायन से आकर इसमें

शरीक हुई थीं, पर विजय मुसलमानों को ही प्राप्त हुई। इसी तरह ताबड़-तोड़ 12 जगहों पर और भी लड़ाइयां हुईं। इराक़ चूंकि ईरानियों का मुख्य प्रदेश था और ईरान की राजधानी "मदायन" इसी में स्थित थी, इसलिए ईरानियों ने बड़ी ही वीरता से मुसलमानों का मुक़ाबला किया, पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार के सामने उन्हें हर जगह सिर झुकाना पड़ा। इस्लामी सेनापति ने इतनी तेज़ी और कामयाबी से हमले किए कि शत्रु को सांस लेने की मुहलत न मिली और कुछ ही दिनों में मैदान साफ़ हो गया।

अनोखी बात तो यह है कि इतनी लड़ाइयां और उनमें सफल होने के बावजूद इसी थोड़ी-सी मुद्दत में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रशासनिक प्रबन्ध भी किए, कर्मचारी नियुक्त किए, टैक्सों की वसूली का इंतिज़ाम किया, काश्तकारों और ज़मींदारों से लगान के समझौते किए। ईरानियों ने शुरू में इन विजयों को अरब की मामूली लूट-मार समझा था, पर जब मुसलमानों का संकल्प, न्याय और व्यवहार देखा तो अपने-अपने घरों को बड़े ही इत्मीनान के साथ वापस चले गए। हर परगने और इलाक़े के रहनेवालों ने अपने नुमाइन्दे भेजकर जिज़्ए के समझौते किए और समझौतों के बाद पूरे इत्मीनान के साथ कारोबार में लग गए।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सेना के प्रशासनिक प्रबन्धों को एक-दूसरे से अलग कर रखा था। सैनिक अधिकार अलग थे और प्रशासनिक अलग। यही कारण है कि पहली लड़ाई के बाद जिसमें हुरमुज़ काम आया, सेना के कप्तान हज़रत सईद बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु और प्रशासनिक अधिकारी सुवैद बिन मुकरिम रज़ियल्लाहु अन्हु नियुक्त किए गए। जिन परगनों के रहने वाले मुक़ाबले पर नहीं आए, उनसे छेड़खानी नहीं की गई और शान्तिपूर्वक लगान का इन्तिज़ाम कर लिया गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की बेहतरीन व्यवस्था की गवाही इससे बढ़कर और क्या हो सकती है कि 50 दिन के भीतर ही अधिकृत भाग का टैक्स वसूल होकर ख़ज़ाने में दाख़िल हो गया, जिससे मुसलमानों को आगे की लड़ाइयों में बड़ी मदद मिली। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का नियम यह था कि जहां पहुंचते थे, सबसे पहले इस्लाम का सन्देश पहुंचाते थे, अगर यह बात वहां के लोगों को स्वीकार न होती तो जिज़िया मांगते, इससे भी

इंकार होता तो लड़ाई का एलान कर देते। जिज़िया "हीरा-सन्धि" में चार दिरहम प्रति व्यक्ति था (अर्थात् एक रुपया)। यह योगियों और सन्यासियों और ग़रीबों से नहीं लिया जाता था। जिज़िया के बदले में मुसलमानों की ओर से उनकी रक्षा का वादा होता था और समझौते में इसकी व्यवस्था कर दी जाती थी कि अगर हम तुम्हारी रक्षा न कर सकेंगे तो जिज़िया भी न लेंगे। इन लड़ाइयों में बड़ी सावधानी से काम लिया जाता और साथ ही हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हर छोटी-बड़ी घटना की सूचना रहती थी, इसका अन्दाज़ा निम्न घटना से कीजीए—

मज़ह की लड़ाई में जब मुसलमानों ने रात में हमला कर दिया तो दो मुसलमान भी जो शत्रुओं में रहते थे, काम आए— एक का नाम था अब्दुल उज़्ज़ा और दूसरे का नाम था लबीद। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह घटना सुनी तो दोनों का ख़ून-बहा (ख़ून का जुर्माना) उनके वारिसों को दे दिया और हुक्म दिया कि उनके सम्बन्धियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, उसी के साथ यह भी कहा—

"इसकी ज़िम्मेदारी मेरे सिर नहीं हैं जबकि वे ऐसी जगह ठहरे हुए थे, जहां से लड़ाई चल रही है।" हीरा पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हीरा को अपना हेडक्वार्टर बनाया, वहीं से चारों ओर प्रबन्ध किए जाते। इराक़ की लड़ाई के सिलसिले में ख़लीफ़ा के हुक्म इस तरह थे कि जब हीरा पर ऊंचाई की ओर निचले हिस्से की दोनों इस्लामी सेनाएं जमा हो जाएं तो एक टुकड़ी का कप्तान हीरा में रुके और दूसरा राजधानी मदायन की ओर आगे बढ़े। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी लड़ाइयां ख़त्म करके हीरा पहुंच गए, पर हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु इस तेज़ी से न ख़त्म कर सके। इसलिए उन्हें ख़लीफ़ा के हुक्म के मुताबिक़ दौमतुलजुन्दल तक जाना पड़ा। इसी सिलसिले में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु कर्बला की छावनी तक गए। उस वक़्त मुसलमानों की लड़ाई का सिलसिला दजला के किनारे तक पहुंच चुका था। मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु मदायन के कुछ मोर्चों पर लड़ रहे थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ दिनों तक कर्बला में ठहरे रहे, सिर्फ़ इसलिए कि जिन छावनियों का ख़ाली कराना अयाज़ के सुपुर्द था, उन्हें जीतकर अरबों के

क़ब्ज़े मे दे दें, ताकि मुसलमानों का पिछला हिस्सा सुरक्षित हो जाए और आने-जाने का सिलसिला बिना किसी भय के जारी रहे, यही हुक्म ख़लीफ़ा का भी था।

रमज़ान के महीने में दौमतुलजुन्दल आदि की लड़ाइयां जीतकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़िराज़ पहुंचे, जहां ईरान, सीरिया और जज़ीरे की सीमाएं मिलती हैं। यहीं पर उन्होंने ईद की नमाज़ पढ़ी। फ़िराज़ में मुसलमानों के इस तरह जमा होने पर रूमियों को जोश और ग़ुस्सा आया और उन्होंने ईरान की छावनियों से अरब काफ़िरों के क़बीलों आदि से मदद लेकर, मुसलमानों के मुक़ाबले का इरादा कर लिया। तग़लब आदि क़बीले रूमी सीमा पर आबाद थे और उनमें मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहले से ही ग़ुस्सा भरा हुआ था। इस तरह रूमी, ईरानी और अरब सबने संयुक्त मोर्चा बनाकर मुसलमानों पर धावा बोल दिया। फ़रात के किनारे दोनों सेनाएं इकट्ठा हुई, मुक़ाबला हुआ और विजय ने मुसलमानों के क़दम चूमे। इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु 10 दिन तक फ़िरोज़ में ठहरे रहे, फिर मक्का पहुंचकर हज करते हुए हीरा को वापस हो गए।

सीरिया की लड़ाई

जैसे ईरानी साम्राज्य की सरहदें अरब राज्य की सरहदों से मिली हुई थीं, वैसे ही रूमी साम्राज्य की सरहदों को भी छू रही थीं। इस्लाम और इस्लामी राज्य की बढ़ती शक्ति को अगर ईरानवालों ने एक बड़ा ख़तरा समझा तो रूमवाले भी इस "ख़तरे" को पहले ही भांप चके थे। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय ही से रूमी सरहदों पर तोड़-फोड़ और झड़पें शुरू हो गई थीं कि यह साम्राज्य इस्लाम की अभरती शक्ति को कैसे भी सहन करने के लिए तैयार नहीं है। मौता की लड़ाई और तबूक़ की तैयारी इसी बात का सबूत है कि रूमी साम्राज्य की कुदृष्टि इस्लाम और मुसलमानों पर विशेष रूप से पड़ने लगी थी।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पहले ही दिन से रूमी साम्राज्य की इस चाल को भांप रहे थे। अतएव इराक़ पर विजय पाने के बाद सबसे पहले हज़रत

ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु के नेतृत्व में एक टुकड़ी भेजी और उन्हें हुक्म दिया कि तीमा नामक स्थान पर पहुंचकर पड़ाव डाल दें और दोबारा हुक्म पाने तक आगे न बढ़ें, खुद हमला न करें, उधर से हमला हो तो उसका मुक़ाबला करें। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म के मुताबिक़ तीमा पहुंचकर पड़ाव किया। रूमी सम्राट क़ैसर हिरक़्ल भला ख़बर पाते ही कैसे चुप बैठा रहता, उसने भी मुक़ाबले की तैयारियां शुरू कीं और रूमी फ़ौजें तीमा से तीन मंज़िल के फ़ासले पर जमा होना शुरू हो गईं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को परिस्थिति से अवगत कराया गया तो हुक्म आया—

"आगे बढ़ो, रुको मत और अल्लाह से मदद चाहो।"

इस हिदायत के मुताबिक़ मुसलमानों ने धावा बोल दिया और शत्रुओं को पराजय का मुंह देखना पड़ा। रूमियों की छावनी पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया और कोई फ़ायदा हुआ हो या न हुआ हो, इस झड़प का शुभ परिणाम यह निकला कि रूमियों की ओर से जो क़बीले मुक़ाबले पर आगे बढ़े थे, वे मुसलमान हो गए। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी टुकड़ी के साथ बढ़े। इसी बीच यमन, उमान, बहरैन और दोना में विधर्मियों को ठिकाने लगानेवाली चार इस्लामी फ़ौजें भी वहां से छुट्टी पा चुकी थीं। इन चारों बटालियनों के कमाण्डर थे हज़रत अबू बक्र उबैदा, शुरहबील बिन हसना, यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान और अम्र बिन आस (रज़ि०)। मुसलमानों की इन चारों फ़ौजों की कुल तादाद लगभग 27,000 थी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सेनाओं को भी सीरिया की सरहदों पर लगा दिया, हर टुकड़ी के लिए एक सेनापति नियुक्त किया और उन्हें उसकी दिशा भी बता दी, जैसे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को हिम्स की ओर, अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़लिस्तीन की ओर, यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु को दमिश्क़ की ओर और शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु को जोर्डन की ओर भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की टुकड़ी भी इन्हीं सेनाओं से मिल गई।

सुन्दर उपदेश

जब ये सेनाएं भेजी जा रही थीं तो ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु खुद उन्हें विदा करने के लिए कुछ दूर तक पैदल आए, फिर सेनापति को बहुत-सी बातें नोट कराईं, जिनमें से कुछ ये हैं–

(1) हर हाल में अल्लाह से डरना, वह बातिन को भी वैसे ही देखता है जैसे ज़ाहिर को,

(2) अपने मातहतों से अच्छा व्यवहार करना,

(3) जब उन्हें कुछ बताना हो तो थोड़े में बताना, क्योंकि जब बात लम्बी होती है तो उसका एक हिस्सा दूसरे को भुला देता है,

(4) पहले अपने आपको सुधारना, दूसरे स्वयं ही सुधार की ओर झुकेंगे,

(5) जब तुम्हारे पास शत्रुओं के दूत आएं तो उनका आदर करना,

(6) अपने भेदों को छिपाना, ताकि तुम्हारी व्यवस्था छिन्न-भिन्न न हो,

(7) सदा सच बात कहना, ताकि सही सुझाव मिले,

(8) रात को अपने साथियों की मज्लिसों में बैठना, ताकि तुम्हें हर प्रकार की सूचनाएं मिलती रहें,

(9) सेना में पहरेदारी की अच्छी व्यवस्था करना, कभी-कभी अचानक पहुंच कर पहरेदारी के काम की निगरानी भी करते रहना,

(10) झूठों की संगत से बचना और सच्चे वफ़ादार साथियों का संग पकड़ना,

(11) जिनसे भी मिलना निष्ठापूर्वक मिलना और कायरता आदि से बचना,

(12) तुम कुछ लोगों को देखोगे कि संसार से कटकर अपने पूजाघरों में बैठे हैं, उनसे कदापि न उलझना और उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना।

इसके बाद इस्लामी सेना के चारों सेनापति अपनी-अपनी सेनाओं को लेकर सीरिया की ओर चल पड़े। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बलक़ा पर, शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसरा पर और अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अरव्वा पर पहुंचकर पड़ाव डाला और वहीं मोर्चा बना लिया। जब सीरियावालों को यह ख़बर मिली कि मुसलमानों ने उनके राज्य को घेर लिया

है तो वे बहुत परेशान हुए और अपने सम्राट हिरक़्ल क़ैसर से सहायता चाही। हिरक़्ल को मालूम था कि मुसलमानों की सेना चार हिस्सों में बंटकर चार जगह मोर्चा बना रही है तो उसने भी हर हिस्से के मुक़ाबले के लिए अलग-अलग सेनाएं अपने चार सेनापतियों की मातहती में भेजीं। स्पष्ट रहे कि उसकी सेना संख्या में इस्लामी सेना से कहीं अधिक थी। हिरक़्ल का भाई तज़ारुक़ 90,000 सेना के साथ अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले के लिए, जर्जीरबन तोदर 50,000 सेना के साथ यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले के लिए, क़ीक़ार बिन नस्तूस 60,000 सेना के साथ अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले के लिए और दराक़स 40,000 सेना के साथ शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले के लिए चला।

जब मुसलमानों को मालूम हुआ कि उनकी सेना के हर हिस्से के मुक़ाबले के लिए उससे कई-कई गुना रूमी सेना आ रही है तब भय हुआ कि इस तरह कहीं मुसलमान बहुत बड़ी संख्या में ख़त्म न हो जाएं तो उन्होंने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से राय मांगी।

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा—

"मेरी राय है कि हम सबको इकट्ठा हो जाना चाहिए, ऐसी स्थिति में हम संख्या की कमी की वजह से परास्त न होंगे।

सभी ने अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की राय से सहमति प्रकट की। फिर ख़लीफ़ा से इजाज़त भी ले ली गई। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इजाज़त दे दी और यह भी लिख भेजा कि—

"मुसलमानों को संख्या की कमी के कारण कभी परास्त न होना चाहिए, हां, अगर वे गुनाहों में घिर जाएं तो परास्त हो जाएंगे, इसलिए उन्हें गुनाहों से बचना चाहिए।"

सम्राट हिरक़्ल को मालूम हुआ कि इस्लामी सेनाएं इकट्ठा हो गई हैं तो उसने भी अपनी सेना को इकट्ठा होने का हुक्म दिया। इस तरह सभी सेनाओं ने यरमूक़ की घाटी के किनारे क़ाक़ूसा नामक स्थान पर अपना मोर्चा जमा लिया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के अनुसार इस्लामी सेनाएं भी रूमी सेनाओं के सामने जमा हो गईं और उन्होंने रूमियों का रास्ता रोक लिया।

इस तरह लगभग दो महीने तक दोनों सेनाएं आमने-सामने पड़ी रहीं और किसी को एक दूसरे पर हमला करने की हिम्मत न हुई।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु भी मिल गए

सैनिक दृष्टिकोण से रूमियों की उस समय स्थिति मज़बूत थी, क्योंकि उनके सामने नदी थी और पीछे पहाड़, साथ ही उनकी संख्या भी अधिक थी, इसलिए मुसलमानों ने ख़लीफ़ा से अर्ज़ किया कि उनको कुमक भेजी जाए। वहां से ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म हुआ कि वह इराक़ से सीरिया को चले जाएं। वे मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना नायब बनाकर और 10,000 की सेना लेकर बड़ी तेज़ी से यरमूक़ की ओर चल पड़े।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरी स्थिति की जांच की, जब उन्हें यह मालूम हुआ कि–

(क) रूमी सेना इस्लामी सेना से संख्या में कहीं अधिक है,

(ख) रूमी सेना सामरिक नियमों के अनुसार व्यवस्थिति है,

(ग) मुसलमान संख्या में भी कम हैं और फिर जितने हैं, एक झंडे तले भी नहीं हैं, इसलिय भय है कि लड़ाई लम्बी हो जाए और फिर भी शत्रु को हानि न पहुंचाई जा सके, तो उन्होंने इस्लामी सेना के सरदारों को इकट्ठा किया और फ़रमाया–

"यह लड़ाई एक महान धार्मिक लडाई है। आज हमें घमण्ड को और सेनापति की अवज्ञा को दिल से निकाल देना चाहिए और सिर्फ़ अल्लाह की राह में अपनी कोशिशें लगा देनी चाहिएं। देखो, शत्रु अपनी बेहतरीन व्यवस्था और क्रम के साथ लड़ाई के मैदान में मौजूद है और तुम अव्यवस्थित और बिखरे हुए हो। तुम्हारा यह बिखरा हुआ होना तुम्हारे लिए शत्रु के हमले से अधिक हानि पहुंचाने वाला है और शत्रु के लिए उसकी मदद से कहीं अधिक लाभप्रद है। बेहतर है कि पूरी फ़ौज एक सेनापति की कमान में दे दी जाए और इस पद को बारी-बारी बांट लिया जाए। एक दिन एक सेनापति हो, दूसरे दिन दूसरा। अगर यह राय पसन्द है तो मुझे सेनापति बना देना।"

घमासान से घमासान लड़ाइयों में सदा विजयी रहने वाले हज़रत ख़ालिद

रज़ियल्लाहु अन्हु के इस प्रस्ताव को, जो हर एतबार से उचित व लाभप्रद था, कौन ठुकराता, सभी ने एकमत होकर उनके इस प्रस्ताव को मान लिया और उन्हें सेनापति बना दिया गया।

दोनों ओर की सेनाएं सजीं। लड़ाई के समय इस्लामी सेना की कुल संख्या 36,000 थी, जबकि रूमी सेना की संख्या 2,40,000 तक पहुंच गई थी, अर्थात रूमी सेना इस्लामी सेना की लगभग सात गुनी थी।

एक अनोखी घटना

लडाई के मैदान में दोनों ओर की सेनाएं बिल्कुल तैयार खड़ी हैं। आर्डर मिलने की देर है और घमासान की लड़ाई छिड़ जानेवाली है कि इतने में एक घटना घटती है— एक अनोखी घटना। सत्य और असत्य में अन्तर कर देनेवाली घटना, आंखें खोल देनेवाली घटना। आप इसे पढ़िए और देखिए कि सत्य किस-किस तरह शत्रुओं के मन में भी घर कर जाता है और शत्रु की पंक्तियों में खड़ा होनेवाला नामी व्यक्ति किस तरह इस्लाम की गोद में आ गिरता है।

फ़ौजें तैयार खड़ी हैं कि रूमियों का सरदार जर्जा मैदान से निकलता है और ललकार कर कहता है "ख़ालिद हमारे सामने आएं"। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे को शरण देने के बाद आपस में इस तरह बातचीत करते हैं—

"अल्लाह ने तुम्हारे नबी के पास आसमान से तलवार भेजी थी, वह तुम्हें दी गई और उसका असर है कि तुम हर जगह विजयी रहते हो?"

"नहीं।"

"फिर तुम्हें सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तलवार) की उपाधि क्यों मिली?"

"अल्लाह ने अपने नबी को हमारे पास भेजा। उन्होंने इस्लाम हमारे सामने पेश किया, पहले तो हम सब उससे दूर भागे, फिर कुछ ने उसकी पुष्टि कर दी और मुसलमान हो गए और कुछ दूर-दूर रहकर ही झुठलाते रहे। मैं उन झुठलानेवालों में से एक था। इसके बाद अल्लाह ने हमारे दिलों को फेर दिया, गरदनें झुका दीं और सीधा रास्ता दिखाया। मैंने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन स्वीकार कर लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ ख़ालिद! तू अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है जो मुश्रिकों के मुक़ाबले के लिए म्यान से निकली है।'

नतीजा यह हुआ कि अब मैं तमाम मुसलमानों में सबसे ज़्यादा मुश्रिकों का शत्रु हूं।"

"तुमने सच कहा, अच्छा अब यह बताओ कि इस्लाम का सन्देश क्या है?"

"इस बात का मानना कि अल्लाह के अलावा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बंदे और रसूल हैं और उसके संदेश की पुष्टि, जो वह अल्लाह की ओर से लाए।"

"अगर उसको कोई न माने?"

"जिज़िया दे।"

"ऐसा भी स्वीकार न करे?"

"हम पहले लड़ाई का एलान करेंगे।"

"जो तुम में शामिल हो उसका स्थान?"

"अल्लाह का हुक्म है कि सब मुसलमान दर्जे में बराबर हैं, भले ही बड़े हों या छोटे, पहले के हों या बाद के।"

"जो आज ईमान लाए वह भी दर्जे में बराबर होगा?"

"बराबर होगा, बल्कि उससे भी ऊंचा।"

"यह कैसे?"

"हम जब मुसलमान हुए तो पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जीवित थे, वह्य के आने का सिलसिला जारी था, आप आसमानी हुक्मों की ख़बर देते थे, हम प्रत्यक्ष चमत्कार व गुणों को अपनी खुली आंखों से देख लेते थे। ऐसी स्थिति में हमारा मुसलमान होना अनिवार्य था, आज तुम उन बातों को नहीं देखते, फिर भी ईमान लाते हो, तो तुम इमसे श्रेष्ठ ही हो।"

"तुम क़सम खाकर कह रहे हो कि तुमने मुझसे तमाम बातें सच कही हैं? धोखा नहीं दिया है? दिल रखनेवाली बात नहीं की है?"

"अल्लाह की क़सम! न मैंने झूठ कहा, न मुझे तुमसे या किसी से घृणा है। तुमने पूछा, उसका सच-सच जवाब मैंने दे दिया। अल्लाह मेरा मददगार है।"

"निस्सन्देह तुमने सच ही कहा है।"

इतना कहते ही जर्जा ने अपनी ढाल पीछे डाल दी और कहा–

"मुझे मुसलमान बना लो।"

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जर्जा को डेरे में ले जाते हैं ताकि उन्हें नहला-धुला कर मुसलामन बनाएं, तो इसी बीच रूमियों की सेना क़ाबू से बाहर हो जाती है और आम धावा बोल देती है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जर्जा के साथ बाहर आते हैं तो देखते हैं कि यहां मुसलमानों पर रूमी सेना चढ़ दौड़ी है। बस फिर क्या है, घमासान लड़ाई शुरू हो जाती है और तलवारों से तलवार बजने लगती है। इसी बीच देखनेवाली आंखें देखती हैं कि वही जर्जा जो सुबह तक मुसलमानों का कट्टर दुश्मन था, अब रूमियों के ही घोर शत्रु बन बैठे हैं और अन्त में शहीद हो जाते हैं। कैसी विचित्र है विधि की यह विडम्बना और कैसा है सत्य का गहरा प्रभाव।

नतीजा वही निकला जो निकलना चाहिए– सत्य की जीत असत्य की हार। दूसरे दिन सूर्य ने यरमूक़ पर इस्लामी ध्वजा को फहरते देखा और देखा कि मुसलमानों की इस विजय ने रूमी साम्राज्य की जड़ें हिला दी हैं और रूमियों पर इस्लाम की विजय के दरवाज़े खुलते जा रहे हैं।

राजधानी का दूत

लड़ाई अभी चल रही थी कि इसी बीच इस्लामी रान्य की राजधानी मदीना से एक ऐसा दूत आया जिसके हाथ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम एक पत्र था और साथ ही यह शोक समाचार भी कि इस्लामी रान्य के पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु स्वर्गवासी हो गए।

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।"

(निश्चय ही हम सब अल्लाह ही के लिए हैं और हमें उसी की ओर लौट कर जाना है।)

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का देहान्त 15 दिन बीमार रहने के बाद 21 जुमादल उख़रा सन् 13 हि० की शाम को 63 साल की उम्र में हुआ। उनकी

ख़िलाफ़त की मुद्दत कुल दो वर्ष तीन महीने दस दिन रही।

उत्तरधिकारी का चुनाव

किसी भी राज्य के कुशल शासक के उत्तरधिकारी को खोज निकालना सदा ही एक बड़ी समस्या रही है, ख़ास तौर से शुरू के इस्लामी ख़लीफ़ों के लिए। जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के रोग ने ज़ोर पकड़ लिया तो लोगों की यही इच्छा हुई कि वे अपना उत्तरधिकारी स्वयं ही नियुक्त कर दें, वरना बाद में मतभेद हो सकता है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तो इस मसले पर सोचते ही थे, उन्होंने इस बारे में वरिष्ठ साथियों से मश्विरे किए और इसी नतीजे पर पहुंचे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाना चाहिए।

कुछ लोगों ने, जिन्हें उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के स्वभाव की तीव्रता का भय था, अपने इस विचार को प्रकट किया तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि उमर की सख़्ती इसी कारण थी कि वह मेरी नर्मी को जानते थे। मेरा तजुर्बा है कि जब मैं ग़ुस्से में होता तो वह ग़ुस्सा दूर करने की कोशिश करते, नर्मी देखते तो सख़्ती का सुझाव देते।

मश्विरे के बाद जब बात पक्की हो गई तो एक दिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ऊपर चढ़े। कमज़ोरी की वजह से चढ़ने की शक्ति न थी। उनकी पत्नी हज़रत असमा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें हाथों से सम्भाले हुए थीं। नीचे लोग इकट्ठा थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा—

"क्या तुम उस व्यक्ति को पसन्द करोगे जिसे मैं उत्तरधिकारी बनाऊं, उसे ख़ूब समझ लो और क़सम खाकर कहता हूं कि मैंने सोच-विचार करने में कोई कमी नहीं की और न ही मैंने अपने किसी सगे-सम्बन्धी को ही नियुक्त किया है। मैं उमर बिन ख़त्ताब को अपना उत्तराधिकारी बनाता हूं, तुम मेरा कहा सुनो और मानो।"

सबने कहा, "हमने सुना और माना।"

इसके बाद नीचे उतर आए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर सन्धि-पत्र लिखवाया, जो इस प्रकार था—

ख़िलाफ़त की मुद्दत कुल दो वर्ष तीन महीने दस दिन रही।

उत्तरधिकारी का चुनाव

किसी भी राज्य के कुशल शासक के उत्तरधिकारी को खोज निकालना सदा ही एक बड़ी समस्या रही है, ख़ास तौर से शुरू के इस्लामी ख़लीफ़ों के लिए। जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के रोग ने ज़ोर पकड़ लिया तो लोगों की यही इच्छा हुई कि वे अपना उत्तरधिकारी स्वयं ही नियुक्त कर दें, वरना बाद में मतभेद हो सकता है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तो इस मसले पर सोचते ही थे, उन्होंने इस बारे में वरिष्ठ साथियों से मश्विरे किए और इसी नतीजे पर पहुंचे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाना चाहिए।

कुछ लोगों ने, जिन्हें उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के स्वभाव की तीव्रता का भय था, अपने इस विचार को प्रकट किया तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि उमर की सख़्ती इसी कारण थी कि वह मेरी नर्मी को जानते थे। मेरा तजुर्बा है कि जब मैं ग़ुस्से में होता तो वह ग़ुस्सा दूर करने की कोशिश करते, नर्मी देखते तो सख़्ती का सुझाव देते।

मश्विरे के बाद जब बात पक्की हो गई तो एक दिन हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ऊपर चढ़े। कमज़ोरी की वजह से चढ़ने की शक्ति न थी। उनकी पत्नी हज़रत असमा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें हाथों से सम्भाले हुए थीं। नीचे लोग इकट्ठा थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा–

"क्या तुम उस व्यक्ति को पसन्द करोगे जिसे मैं उत्तरधिकारी बनाऊं, उसे ख़ूब समझ लो और क़सम खाकर कहता हूं कि मैंने सोच-विचार करने में कोई कमी नहीं की और न ही मैंने अपने किसी सगे-सम्बन्धी को ही नियुक्त किया है। मैं उमर बिन ख़त्ताब को अपना उत्तराधिकारी बनाता हूं, तुम मेरा कहा सुनो और मानो।"

सबने कहा, "हमने सुना और माना।"

इसके बाद नीचे उतर आए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर सन्धि-पत्र लिखवाया, जो इस प्रकार था–

"यह अबू बक्र बिन अबी क़हाफ़ा के अन्तिम जीवन का वसीयतनामा है जब कि वह इस लोक से विदा हो रहा है और परलोक में दाख़िल हो रहा है..... मैंने उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, इसलिए उनका हुक्म सुनो और मानो। अच्छी तरह समझ लो कि इस बारे में अल्लाह, उसके रसूल, उसके धर्म और स्वयं अपनी और तुम्हारी भलाई का हक़ अदा करने की मैंने पूरी कोशिश की है। आशा वह न्याय से काम लेंगे, उनके बारे में मेरा यही विचार है और मैं यही जानता भी हूं और अगर वे बदल गए तो हर व्यक्ति अपनी करनी को भोगेगा। वैसे मेरी नीयत ठीक है, आगे की नहीं जानता। जो लोग अन्याय करेंगे, वे जल्द देख लेंगे कि वे किस पहलू पर पलटा खा रहे हैं और तुम पर शान्ति व अल्लाह की दया व कृपा हो।"

इस सन्धि-पत्र के लिखे जाने और प्रसारित कर दिए जाने के बाद एक व्यक्ति ने आकर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आपने उमर को उत्तराधिकारी नियुक्त किया है, हालांकि आप जानते हैं कि वे लोगों से आपके सामने कैसे व्यवहार करते हैं, उस समय क्या होगा जबकि वे अकेले रह जाएंगे। आप अपने पालनहार से मिलने जा रहे हैं, वह आप से जनता के बारे में प्रश्न करेगा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु उस समय लेटे थे। ऐसा सुनते ही कहा, मुझे बिठा दो। बैठ गए तो कहने लगे—

"क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? मैं जिस वक़्त अल्लाह के सामने जाऊंगा और मुझसे पूछा जाएगा, तो मैं बताऊंगा कि पालनहार! मैं तेरे माननेवालों में से एक बेहतर व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाकर आया हूं।"

इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एकान्त में बुलाया और जो समझाना था समझाया, फिर हाथ उठाकर दुआ की—

"ऐ अल्लाह! मैंने यह चुनाव सिर्फ़ मुसलमानों की भलाई के इरादे से किया है और इस भय को सामने रखकर किया है कि इन में बिगाड़ न पैदा हो जाए। मैंने ऐसा काम किया है जिसे तू अच्छी तरह जानता है। मैंने बहुत सोच-विचार के बाद राय बनाई है, उमर सबसे अच्छे और मुसलमानों के अधिक हितैषी हैं। मेरे लिए तेरा जो हुक्म आना था, आ चुका, अब मैं इनको तेरे सुपुर्द करता हूं। वे तेरे बन्दे हैं और उनकी लगाम तेरे हाथ में है। ऐ अल्लाह! उनके उत्तराधिकारियों

को योग्यता दे, उत्तराधिकारी को सन्मार्ग पर चल रहे ख़लीफ़ों में से बना और उनको इबादत की क्षमताएं दे।"

इसी तरह एक दिन जबकि बीमारी चल ही रही थी, पूछा कि मुझे बैतुलमाल (राजकोष) से अब तक कुल कितना वज़ीफ़ा मिला है? हिसाब किया गया तो छः हज़ार दिरहम (लगभग 1500 रु०) था। हुक्म दिया कि मेरी अमुक ज़मीन बेचकर बैतुलमान का रुपया वापस दे दिया जाए। अतएव सब ज़मीन बेचकर रुपया वापस दे दिया गया।

उसी समय यह भी मालूम कराया गया कि ख़लीफ़ा बनने के बाद मेरे माल में क्या बढ़ोतरी हुई। मालूम हुआ कि–

(1) एक हब्शी दास है जो बच्चों की देख-रेख करता है और वही मुसलमानों की तलवारों पर पालिश करता है,

(2) दो ऊंटनी है जिस पर पानी लदकर आता है और,

(3) एक सवा रुपय की चादर है।

वसीयत की कि मरने के बाद ये तमाम चीजें दूसरे ख़लीफ़ा के पास पहुंचा दी जाएं।[1] मृत्यु के बाद जब ये चीज़ें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आईं तो रोने लगे और कहा– "ऐ अबू बक्र! आप अपने उत्तरधिकारियों के लिए काम बहुत कठिन कर गए।"

मरने से कुछ पहले अपनी बेटी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितने कपड़ों का कफ़न दिया गया था? कहा, "तीन कपड़ों का।" वसीयत की कि मेरे कफ़न में भी तीन कपड़े हों, दो चादरें जो मेरी देह पर हैं, धोली जाएं और एक कपड़ा नया ले लिया जाए।

बेटी ने कहा– "अब्बा जान! हम इतने तंगदस्त नहीं हैं कि नया कपड़ा न ख़रीद सकें।"

उत्तर दिया– "बेटी! नए कपड़े मुर्दों के मुक़ाबले में ज़िन्दों के लिए अधिक उचित हैं। कफ़न तो पीप और ख़ून के लिए है।"

कैसा था हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, इस्लामी राज्य के पहले

1. स्पष्ट रहे कि ख़लीफ़ा बनने से पहले हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु एक सफल व्यापारी थे।

ख़लीफ़ा, का जीवन-आदर्श! महान आदर्श!

कुछ और कारनामे

पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त की मुद्दत कुल सवा दो साल ही थी, पर इस थोड़ी-सी मुद्दत में उन्होंने जैसे-जैसे कारनामे अनजाम दिए, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। इस्लाम की नाव को कठिन घड़ियों से उबारा, इस्लामी राज्य को राष्ट्रद्रोहियों के हाथों टुकड़े-टुकड़े होने से बचाया और एक ऐसे राज्य की नींव डाली कि जिसका झंडा बाद में आधे संसार पर फहराने लगा। आप कह सकते हैं कि दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में बड़े-बड़े काम अनजाम दिए गए, बड़े-बड़े मारके जीते गए, यहां तक कि रूम व ईरान के दफ़्तर उलट दिए गए, पर तनिक इस पर भी तो विचार किजीए कि इसकी नींव कहां पड़ी? देश ने ये साहसपूर्ण क़दम कब उठाए? शासन में व्यवस्था व संगठन की बुनियाद किसने रखी और सबसे बढ़कर यह कि स्वयं इस्लाम को मंझधार से किसने उबारा? क्या हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा भी किसी और का नाम लिया जा सकता है।

ख़िलाफ़त-व्यवस्था

इस्लामी ख़िलाफ़त या लोकतन्त्र की बुनियाद सबसे पहले हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने डाली। इसी से अन्दाज़ा कीजिए कि स्वयं उनका चुनाव जनता द्वारा हुआ था और उनके समय में जितने बड़े-बड़े काम अनजाम पाए थे सबमें बड़े और मान्य सहाबियों की रायें व मश्विरे शामिल थे। यही वजह है कि उन्होंने तजुर्बे और राय रखनेवाले सहाबियों को राजधानी से कभी हटने नहीं दिया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को रखा था, लेकिन उन्होंने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को तैयार किया कि हज़रत उमर राय व मश्विरे में मदद देने के लिए छोड़ जाएं। ऐसे ही सीरिया पर हमला करने का मामला रहा हो या ज़कात के इंकारियों के मुक़ाबले में जिहाद करने का विचार, हर अहम मामले में बड़े सहाबियों की राय मालूम करना और उनके मश्विरों पर

क़दम उठाना, ऐसा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का आजीवन अमल रहा। यह दूसरी बात है कि उनके समय में शूरा (सलाहकार परिषद) की कोई नियमित व्यवस्था न थी।

इब्ने साद रज़ियल्लाहु अन्हु का कथन है—

"जब कोई मामला पेश आता था तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु रायवाले और ज्ञानी सहाबियों से मश्विरा कर लेते थे और मुहाजिरों और अंसारियों में से कुछ ऊंचे लोगों को जैसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु, उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को तो अवश्य ही बुलाते थे।"

शासन-व्यवस्था

शासन को लोकतन्त्र की बुनियाद पर चलाने के साथ-साथ शासन क्षेत्र के सीमित होने के बावजूद, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने शासन-व्यवस्था को भी ठीक-ठाक रखने पर पूरा बल दिया। उन्होंने अरब को अनेकों सूबों और ज़िलों में बांट दिया था, जैसे— मदीना, मक्का, तायफ़, सनआ, नजरान, हज़रमौत, बहरैन और दौमतुलजन्दल आदि। हर सूबे का एक गवर्नर होता था, जो हर ज़िम्मदारी निभाता था, यानी वही एडमिनिस्ट्रेटर भी होता था और जज भी। उन्होंने कुछ प्रमुख विभाग राजधानी में भी स्थापित कर रखे थे, जिनके अलग-अलग ज़िम्मेदार हुआ करते थे। जैसे हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु सीरिया के सेनापति बनाए जाने से पहले वित्त आधकारी थे, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़ाज़ी थे और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु व हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु आफ़िस सिक्रेटी थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी को कोई ज़िम्मेदारी देते या किसी पद पर नियुक्त करते, तो साधारणतः पहले उसे बुलाते, उसकी ज़िम्मेदारियों की व्याख्या करते और बड़ी ही प्रभावकारी भाषा में अच्छी व सुन्दर रीति-नीति अपनाने को कहते। जैसे यज़ीद बिन सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु को सीरिया की ओर भेजते हुए उन्होंने ये शब्द कहे—

"ऐ यज़ीद! तुम्हारी नातेदारियां हैं, शायद तुम उन्हें अपनी अफ़सरी से फ़ायदा पहुंचाओ, वास्तव में यही सबसे बड़ा ख़तरा है, जिससे मुझे डर है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो कोई मुसलमानों का हाकिम बनाया जाए और वह उनपर केवल रियायत करके किसी को अफ़सर बना दे, तो उसपर अल्लाह की धिक्कार हो, अल्लाह उसका कोई बहाना और उसके बदले का कोई भी प्रतिदान स्वीकार न करेगा, यहां तक कि उसे जहन्नम में दाख़िल कर देगा।"

अधिकारियों पर कड़ी निगरानी

किसी भी राज्य में कैसा भी सुगठित व सुव्यवस्थित क़ानून चल रहा हो, अगर उसके अधिकारियों व ज़िम्मेदार अफ़सरों की कड़ी निगरानी की व्यवस्था न की जाए, तो तय है कि शासन-व्यवस्था ढीली-ढाली हो जाएगी। इसी से तो स्वभाव के एतबार से नम्र होने के बावजूद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने शासन-व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने के लिए कड़ी निगरानी और कठोर जांच-पड़ताल व पूछ-ताछ का सहारा लिया। देखिए ना, यमामा की लड़ाई में मुजाआ हनफ़ी ने, जो झुठे मुसैलमा की सेना का सेनापति था, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को धोखा देकर मुसैलमा की पूरी जाति को मुसलमानों के प्रभाव से बचा लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़द्दारी पर उसे सज़ा देने के बजाए उसकी लड़की से शादी कर ली। चूंकि इस लड़ाई में बहुत से सहाबी शहीद हुए थे, इसलिए हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की इस "उदारता" पर बड़ा रोष प्रकट किया और लिखा–

"तुम्हारे तम्बू के डेरों के पास मुसलमान का ख़ून बह रहा है और तुम शादी के चक्कर में पड़े हुए हो?"

ऐसे ही अपराधियों के साथ निजी तौर पर नम्र व्यवहार करने में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अधिक प्रसिद्ध थे, पर पूरे राष्ट्र के चरित्र की निगरानी व देख-भाल के लिए इसे भी ज़रूरी समझते थे कि अपराधियों को उनके अपराध की पूरी सज़ा दी जाए। कहां एक ओर उनकी नम्रता का हाल यह था कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने ही में असलम क़बीले के एक व्यक्ति ने उनके सामने ग़द्दारी सरीखे अपराध को स्वीकार किया, इस पर उन्होंने कहा—

"तुमने मेरे अलावा किसी और से भी इसका वर्णन किया है?"

"नहीं", उसने कहा।

अल्लाह से तौबा करो", हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बोले, "और इसको छिपाए रखो, अल्लाह भी इसे छिपाएगा, क्योंकि वह अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है।"

पर उसने ऐसा नहीं किया और उसे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ी।

और जनहित को सामने रखते हुए दूसरी ओर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का हाल यह था कि अशान्ति फैलानेवालों और द्रोहियों को बड़ी ही कठोर सज़ाएं देते थे। उस ज़माने में अब्दुल्लाह बिन अयास सलमी प्रसिद्ध डाकू था जिसने पूरे देश में अशान्ति फैला रखी थी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने तरीफ़ा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजकर उसे गिरफ़्तार कराया और सख़्त सज़ा देने का हुक्म दिया।

फ़तवा-विभाग

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जीवन के तमाम पहलुओं में इस्लामी क़ानून को लागू करने के लिए फ़तवा-विभाग भी क़ायम किया था और हज़रत उमर, उस्मान, अली, अब्दुर्रहमान बिन काब और ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हुम को, जो अपने ज्ञान व सूझ-बूझ में तमाम लोगों से आगे थे, इस काम पर नियुक्त किया। इनके सिवा किसी और को फ़तवा देने की इजाज़त न थी।

ग़ैर मुस्लिम प्रजा के अधिकार

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में इस्लाम के अलावा दूसरे धर्म के माननेवालों को इस्लामी राज्य में सन्धि पत्रों द्वारा जो अधिकार दिए गए थे, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने न सिर्फ़ उन अधिकारों को बाक़ी रखा, बल्कि अपनी मुहर व हस्ताक्षर से फिर उसकी पुष्टि की। स्वयं उनके समय में जिन देशों पर विजय प्राप्त की गई, ग़ैर मुस्लिम जनता को लगभग वही अधिकार

दिए गए जो मुसलमानों को प्राप्त थे। हियरावालों से जो सन्धि हुई उसके ये शब्द भी इसी पर गवाही देते हैं—

"उनकी ख़ानक़ाहें और गिरजे गिराए न जाएंगे और न कोई ऐसा क़िला गिराया जाएगा, जिसमें वे ज़रूरत के वक़्त शत्रुओं के मुक़ाबले में क़िलाबन्द होते हैं। शंख और घंटे बजाने की रोक न होगी और न त्यौहार के मौक़ों पर क्रास निकालने से रोके जाएंगे।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में जिज़िया या टैक्स ;ज्ंगद्ध की दर बहुत ही आसान थी और उन्हीं लोगों से लिया जाता था जो उसके अदा करने की क्षमता रखते हों। इसी से हियरा के 7,000 निवासियों में से 1,000 निवासी छूट पर थे और बाक़ी पर केवल दस-दस दिरहम वार्षिक टैक्स लगाया गया था। सन्धि-पत्रों में यह शर्त भी थी कि कोई ज़िम्मी (ग़ैर मुस्लिम) बूढ़ा, अपंग और ग़रीब हो जाएगा तो उसे जिज़िया से छूट दे दी जाएगी।

दूसरे कारनामे

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दसूरे कारनामों में से एक सबसे बड़ा कारनामा यह है कि उन्होंने अपनी सेना को प्रशिक्षित ;ज्तंपदमकद्ध करने का उचित प्रबन्ध किया और एक-एक सिपाही के मन में यह बात बिठा दी कि उसका लड़ाई में उठा हुआ हरेक क़दम अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए होगा, इसमें न तो उसका कोई स्वार्थ होना चाहिए और न किसी प्रकार का लोभ। देखिए ना, सीरिया की ओर जाती हुई सेना को कैसे-कैसे आदेश दिए। आपने कहा—

"तुम ऐसी जाति को पाओगे जिसने अपने आपको अल्लाह की इबादत के लिए वक़्फ़ कर दिया है, उसे छोड़ देना। मैं तुम्हें दस बातों की वसीयत करता हूं—

(1, 2, 3) किसी औरत, बच्चे और बूढ़े को क़त्ल न करना,

(4) फलदार पेड़ को न काटना,

(5) किसी आबाद जगह को वीरान न करना,

(6,7) बकरी और ऊंट, खाने के अलावा ज़िब्ह न करना,

(8) नख़लिस्तान (मरुद्यान) न जलाना,

(9) ग़नीमत के माल में से बिना इजाज़त कोई चीज़ न लेना, और

(10) भीरुता (कायरता) से काम न लेगा।"

सेना की ट्रेनिंग के समय हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बुढ़ापे और कमज़ोरी के बावजूद खुद छावनियों का मुआयना करते थे और सिपाहियों में भौतिक या आध्यात्मिक, जिस रूप में भी कोई त्रुटि दिखाई पड़ती थी, उसका सुधार कर देते थे।

निजी जीवन

इस्लाम से पहले का जो युग था, उसके बारे में सभी जानते हैं कि न सिर्फ़ अरबों के विश्वास में त्रुटि पैदा हो गई थी, बल्कि उनके चरित्र-आचरण में भी बड़ी त्रुटियां आ गई थीं। शराब-जुए तो उनकी घुट्टी में पड़े हुए थे ही, लूट-मार और गन्दे आचरणों के नमूने भी कुछ कम न मिलते थे। यह सब कुछ था पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने स्वभाव के अनुसार बचपन से ही इन चीज़ों से दूर रहते। उन्हें शराब व जुए से घृणा थी, वे दुराचार से दूर भागते थे। उनमें रहमदिली, सच्चाई, अमानतदारी आदि कूट-कूटकर भरी थी, यही वजह है कि इस्लाम से पहले जुर्माने की रक़में सब उन्हीं के यहां जमा होतीं। सगे-सम्बन्धियों का ध्यान, मेहमानों की आव-भगत, पीड़ितों की सहायता, दीन-दुखियों की सेवा आदि गुणों में वे सदा ही आगे रहते– फिर मुसलमान होने के बाद और ईमान की दौलत से मालामाल होने के बाद तो उनके ये गुण और भी चमक उठे।

उनके अल्लाह से डर, भय और संयम की दशा यह थी कि मुसलमान होने से पहले ही एक बार उन्हें एक व्यक्ति किसी अनजाने रास्ते से ले गया और यह बता दिया कि इस रास्ते में ऐसे आवारा व बदमाश लोग रहते हैं कि इस ओर गुज़रने में भी लज्जा आती है। इतना सुनना था कि वहीं खड़े हो गए और यह कहकर लौट आए, "मैं ऐसे गन्दे रास्ते से नहीं जा सकता।"

एक बार आपके एक दास ने खाने की कोई चीज़ लाकर सामने रखी। जब खा चुके तो उन्होंने बताया–

"आप जानते हैं यह कैसे प्राप्त हुआ?"

"बताओ!"

"मैंने इस्लाम लाने से पहले एक व्यक्ति का शकुन निकाला था" दास ने बताना शुरू किया, "शकुन निकालना तो जानता न था, केवल उसे धोखा दिया था। आज उसने बदले में यह खाना दिया है।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पूरी स्थिति मालूम हो गई तो मुँह में उँगली डालकर जो कुछ खाया था, क़ै कर दिया। कहा करते थे, "जो शरीर हराम खाने से पलता है, उसका ठिकाना जहन्नम होता है।"

अल्लाह से भय, रसूल से प्रेम और संयम में वे यहां तक आगे बढ़ गए थे कि एक ईद के दिन–

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में अंसार की दो लड़कियां बुआस की लड़ाई के ऐतिहासिक गीत गा रही थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दूसरी ओर मुंह किए हुए आराम कर रहे थे कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए, उनके रसूल-प्रेम व संयम ने इतना भी पसन्द न किया, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को डांटकर बोले–

"रसूलुल्लाह के सामने ये शैतानी बाजे व गाने? तुरन्त ही पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बोल पड़े–

"अबू बक्र! इन्हें गाने दो, हर जाति के लिए एक ईद होती है और यह हमारी ईद है।"

फिर उनका ईश-भय इतना बढ़ा हुआ था कि पाप के किसी कर्म का करना तो बड़ी बात, कड़े शब्द का मुंह से निकल जाना भी उनपर बहुत बोझ हो जाता, यहां तक कि जब तक प्रायश्चित न कर लेते, चैन न लेते।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी बात में मतभेद हो गया। बात करते-करते कोई कड़ा शब्द मुख से निकल गया। परेशान हो उठे, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से क्षमा मांगने लगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्षमा करने से इंकार कर दिया। उस समय हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की विकलता की कोई हद न रही। दौड़े-दौड़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे और अपनी परेशानी उनके सामने रखी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें सांत्वना दी और कहा–

"अबू बक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा, अबू बक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर

देगा, अबू बक्र! अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा।''

इसी बीच हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने इंकार पर पश्चाताप हुआ और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके मकान पर खोजते-खोजते नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आ पहुंचे। उन्हें देखकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दमकते चेहरे का रंग बदलने लगा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने भांप लिया, तुरन्त ही बोल पड़े–

''ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! मैंने ही ज़ुल्म किया था, मेरी ग़लती थी।''

कितना था प्यार इन शब्दों में, और कैसी थी हमदर्दी! अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही जब निवेदन किया तो भला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुस्सा क्यों न ठंडा पड़ता, फिर भी आप वास्तविकता प्रकट किए बिना न रहे और फ़रमाया–

''मैंने अल्लाह की ओर से अपने रसूल होने का एलान किया तो तुम सबने मुझे झुठला दिया, पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने तस्दीक़ करके जान व माल से मेरा ग़म ग़लत किया। क्या तुम मुझसे मेरे साथी को छुड़ा दोगे?''

हज़रत रबीआ बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु में एक पेड़ के लिए आपस में मतभेद हो गया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बातचीत करते समय कोई ऐसा वाक्य कह दिया जो उन्हें बुरा लगा। लेकिन जैसे ही ग़ुस्सा दूर हुआ, कहने लगे–

''रबीआ! तुम भी मुझे ऐसी ही कड़वी बात कह दो।'' उन्होंने इंकार किया तो घबराए हुए और परेशान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ में थे! आपने पूरी बात सुनी और फ़रमाया–

''रबीआ! तुम कोई कड़ा उत्तर न दो, लेकिन यह कह दो– अबू बक्र! अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे।''

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पर इस घटना का इतना प्रभाव था कि वे बुरी तरह रो रहे थे और आंखों से आंसुओं की धारा बराबर बहे चली जा रही थी।

पद-पदवी से उदासीनता

सच्चा ईमान उसी का है और सच्चा मोमिन वही है जिसकी नज़र हर वक़्त आख़िरत पर हो, जो अल्लाह के लिए ज़िन्दा हो और उसी के लिए मरना चाहता हो, न कि संसार में धन-दौलत और पदवी प्राप्त कर लेने की सफलता। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान ऐसा ही था और वे सच्चे मोमिन कहलाए जाने के हक़दार थे। ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियां तो उन्होंने मुसलमानों में गुटबन्दी पैदा होने और उभरते इस्लामी राज्य की नींव उखड़ जाने से बचाने के उद्देश्य से अपने कन्धों पर उठा ली थीं, वरना उनका मन था कि कोई अगर इस बोझ को उठाने के लिए तैयार हो तो यह बोझ अपने कन्धों पर उठा ले।

हज़रत राफ़े ताई रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार मैंने कहा— "आप पहुंचे हुए बुज़ुर्ग हैं, मुझे कुछ वसीयत करें।" बोले—

"अल्लाह तुम पर दया व कृपा करे, नमाज़ें और रोज़े रखो, ज़कात दो, हज करो और सबसे बड़ी बात यह है कि कभी नेतृत्व के उच्च पद स्वीकार न करो। संसार में नेता की ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है और क़ियामत (प्रलय) के दिन उसकी पकड़ भी कड़ी होगी और चार्जशीट भी लम्बी होगी।"

एक बार उन्होंने पीने के लिए पानी मांगा। लोगों ने पानी और शहद लाकर रख दिया, लेकिन जैसे ही मुंह के क़रीब ले गए, अनचाहे ही आंखों में आंसू भी आ गए और इतना रोए कि तमाम लोग प्रभावित हो उठे। जब कुछ शांत हुए तो लोगों ने रोने का कारण पूछा। कहने लगे—

"एक दिन मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था, आप किसी चीज़ को 'दूर-दूर' कह रहे थे" "अल्लाह के रसूल! क्या चीज़ है जिसे दूर फ़रमा रहे हैं? मैं तो कुछ नहीं देखता", मैंने पूछ लिया। फ़रमाया, "यह छली संसार रूप धारण करके मेरे सामने आया था, मैंने उसे दूर कर दिया।"

इस समय मुझे वही घटना याद आ गई और डरा कि कहीं उसके जाल में गिरफ़्तार न हो जाऊं?"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की संसार से उदासीनता अगर देखनी है तो इसमें देखिए कि सत्य की राह में अपनी पूरी पूंजी लुटा दी। फिर नौबत यहां

तक पहुंची कि ख़लीफ़ा बनने के बाद वे बैतुलमाल (राजकोष) के छः हज़ार दिरहम के कर्ज़दार हो गए, लेकिन जनता की एक कौड़ी भी अपने ऊपर ख़र्च करना या औलाद के लिए छोड़ जाना उन्हें पसन्द न था, मरते समय वसीयत कर दी कि मेरा अमुक बाग़ बेचकर बैतुलमाल का क़र्ज़ चुका दिया जाए और जो कुछ बच जाए उसे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया जाए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहतीं हैं कि मरने के बाद जब जांच की गई तो केवल इतनी चीज़ें निकलीं– एक दास और दो ऊंटनियां। अतएव ये तमाम चीज़ें उसी समय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दी गईं। इस्लामी राज्य के दूसरे ख़लीफ़ा की आंखें छलक पड़ीं, रोकर बोले– "अबू बक्र! अल्लाह आप कर कृपा करे, आप मरने के बाद भी संसार से उदासीनता की शिक्षा देना न भूले और न ही इसका मौक़ा दिया कि कोई आप पर उंगली रख रके।"

विनम्रता व सुशीलता

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े ही विनम्र और बड़े ही सुशील थे। किसी भी काम करने में उन्हें झिझक न होती। प्रायः भेड़, बकरियां खुद ही चरा लेते और मुहल्लेवालों की बकरियां दुह देते थे। यही कारण है कि जब आपको ख़लीफ़ा बना लिया गया तो सबसे ज़्यादा मुहल्ले की एक लड़की को यह चिन्ता हो गई कि उसकी बकरियां अब कौन दुहेगा? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना तो फ़रमाया–

"अल्लाह की क़सम! मैं बकरियां दुहूंगा, आशा है कि मेरा ख़लीफ़ा बना दिया जाना मुझे जन-सेवा से रोक न सकेगा।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कपड़े का व्यापार करते थे, ख़लीफ़ा चुने जाने के बाद भी पहले की तरह ही कन्धे पर कपड़ों के थान रखकर बाज़ार की ओर चले। रास्ते में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से भेंट हुई। उन्होंने कहा, "अब आप मुसलमानों के शासक हैं, चलिए हम आपके लिए कुछ वज़ीफ़ा तय कर देंगे।" या एक कथन के अनुसार जब खिलाफ़त की ज़िम्मेदारियों के कारण आप अपना निजी काम न कर सके तो साथियों से कहा, "मेरी क़ौम के लोग जानते हैं कि मेरा पेशा मेरे घरवालों का

बोझ उठाने में नाकाफ़ी न था, और अब मैं मुसलमानों के काम में लग गया हूं, इस कारण मेरे घरवाले इस माल में से खाएंगे और मुसलमानों के लिए व्यापार करेंगे।" साथियों ने इसे मंज़ूर का लिया।

राजधानी से जब कोई सेना भेजी जाती तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी कमज़ोरी और बुढ़ापे के बावजूद दूर तक पैदल जाते। अगर कोई उनके सम्मान में घोड़े से उतरना चाहता तो रोककर कहते—

"इसमें क्या बात है, अगर मैं थोड़ी दूर तक चलकर अल्लाह की राह में अपने पैर धूल में भर लूं, अल्लाह ऐस लोगों पर जहन्नम की आग हराम कर देता है।"

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का हाल तो यह था कि गर्व व अभिमान की निशानियों से भी कांप जाते। एक दिन पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "जो व्यक्ति गर्व से अपना कपड़ा खींचते हुए चलता है। क़ियामत के दिन अल्लाह उसकी ओर नज़र तक न उठाएगा।" हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु घबरा गए कि उनका दामन भी कभी-कभी लटक जाता है, फ़रमाया, "तुम गर्व से ऐसा तो करते नहीं।"

अल्लाह की राह में ख़र्च

हम पिछले पन्नों में यह लिख चुके हैं कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम लाने में जिस निष्ठा और प्रेम का सुबूत दिया और इस्लाम लाने के बाद जिस तरह तन-मन-धन की बाज़ी लगा दी, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। इस्लाम ग्रहण करने से पहले उनके पास 40,000 दिरहम नक़द मौजूद थे, साथ ही निष्ठा भी कुछ कम न थी। जब पैग़म्बरे इस्लाम कृतज्ञता के रूप में कहते—

"जान व माल के रूप में मुझपर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से अधिक किसी का उपकार नहीं"— तो रो-रोकर कहने लगते—

"ऐ अल्लाह के रसूल! जान व माल सब हुज़ूर के लिए ही है।"

इस्लाम के शुरू के दिनों में कुछ दासों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया था, जिसके कारण उनके स्वामी उनपर कठोर अत्याचार करते, उन्हें जलती रेत पर लिटाकर मनों भारी पत्थरों से दबा देते, उन्हें बांध देते, खाना-पीना बन्द कर देते

आदि। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से उनके ये अत्याचार देखे न जाते और उन्हें उनकी क़ीमत उनके स्वामियों को देकर छुड़ा लेते– बिलाल, आमिर, ज़न्नीरा, जारिया, बनू मोमिल, नहदिया आदि न जाने कितने दास व दासी थे जो स्वामियों के ज़ुल्म का शिकार बने हुए थे और जिनकी गरदनों को हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ही ने छुड़ाया था।

ऐसे ही हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दान-पुण्य में भी सदा आगे-आगे रहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनेकों बार चाहा कि वे बाज़ी ले जाएं, पर एक बार भी उनके मुक़ाबले में सफल न हुए। एक बार पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साथियों को सदक़ा (दान-पुण्य) निकालने का हुक्म दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उस समय हमेशा से अधिक धन था। उन्होंने विचार किया कि आज अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से आगे बढ़ जाने का मौक़ा है, इसलिए वे अपना माल लेकर पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, बाल-बच्चों के लिए क्या छोड़ा? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोले "इतना ही?" पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पूरी पूंजी उठा लाए थे। उनसे जब बच्चों के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा, "उनके लिए खुदा और उसके रसूल काफ़ी हैं।" इस त्याग व बलिदान पर तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आंखें खुल गईं, बोले– "अब मैं कभी इनसे आगे नहीं बढ़ सकता।"

जन-सेवा

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा नम्र व हितैषी व्यक्ति जब जन-समूह के भीतर रहेगा तो उसे तो सेवा में आनन्द ही आएगा। वे तो दूसरों की सेवा का मौक़ा खोजते, मुहल्लेवालों का काम करते, बीमारों की देख-भाल करते और अपने हाथ से कमज़ोरों व बूढ़ों की सेवा करने में कभी न झिझकते।

मदीना के क़रीब ही एक बूढ़ी अन्धी औरत रहा करती थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हर दिन सुबह सवेरे ही उसके झोंपड़े में काम कर दिया करते। कुछ दिनों के बाद उन्होंने महसूस किया कि कोई व्यक्ति उनसे भी पहले यह नेक

काम कर जाता है। एक दिन कुछ रात रहे ही पूरी-पूरी खोज करते हुए आए और देखा कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु उस बूढ़ी औरत का काम करके झोंपड़े से निकल रहे हैं, चिल्ला पड़े– "क्या हर दिन आप ही पहले काम कर जाते है?"

धार्मिक जीवन

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रात-रात भर नमाज़ें पढ़ते, दिन को प्रायः रोज़े रखते, ख़ासतौर से गर्मी का मौसम रोज़ों ही में बीतता। नमाज़ों में एकाग्रता की स्थिति यह थी कि लकड़ी की तरह बे हिले-डुले खड़े रहते, अल्लाह का डर इतना पैदा होता कि रोते-रोते हिचकी बंध जाती थी। अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास और परलोक का भय इतना कि हरा-भरा पेड़ देखते तो कहते, "काश! मैं पेड़ ही होता कि हिसाब-किताब के झगड़ों से छूट जाता।" किसी बाग़ से गुज़रते और चिड़ियों को चहचहाते देखते तो ठंडी आहें भरकर कहते– "चिड़ियो! तुम्हें मुबारक हो कि दुनिया में चरती-चुगती हो, पेड़ों की छाया में बैठती हो और क़ियामत में तुम्हारा कोई हिसाब-किताब नहीं। काश! अबू बक्र भी तुम्हारी तरह होता !"

क़ुरआन मजीद जब पढ़ते तो अनचाहे ही आंखों से आंसू जारी हो जाते और इतना फफक कर रोते कि आस-पास के तमाम लोग जमा हो जाते।

सवाब बटोरने का लोभ उनमें कितना था, इसका अन्दाज़ा इस घटना से कीजिए कि एक दिन पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साथियों से पूछा–

"आज तुममें रोज़े से कौन है?"

'मैं', हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा।

फिर कहा– "आज किसी ने जनाज़े का साथ दिया है? किसी ग़रीब को खाना खिलाया है? किसी ने बीमार को देखने जाने का साहस किया है?"

इन सवालों के जवाब में अगर किसी ने हां कहा तो वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

आपने फ़रमाया–

"जिसने एक दिन में इतने सवाब बटोर लिए हों, वह निश्चय ही जन्नत में जाएगा।"

मेहमानों की आव भगत

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मेहमानों की बड़ी आव भगत करते और उनका बहुत ध्यान रखते।

एक बार रात के समय सहाबियों में से कुछ लोग उनके मेहमान थे। उन्होंने अपने बेटे अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु को हिदायत कर दी कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में जा रहा हूं, मेरे वापस आने से पहले इन्हें खिला-पिला देना। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिदायत के मुताबिक़ उनके सामने खाना लगा दिया। संयोग की बात कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु देर से आए और यह मालूम करके कि मेहमान अब तक भूखे बैठे हैं अपने बेटे पर बहुत ज़्यादा नाराज़ होने लगे और बुरा-भला कहकर बोले, "अल्लाह की क़सम! मैं इसको आज खाने में शरीक नहीं करूंगा।" हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु पहले तो डरे, फिर कुछ साहस बटोर कर कहा, "आप अपने मेहमानों से पूछ लीजिए कि मैंने खाने के लिए आग्रह किया था या नहीं?" मेहमानों को जब पूरी बात मालूम हुई तो उन्होंने सब कुछ बताने के बाद कहा, "अल्लाह की क़सम, जब तक आप अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु को खाना न खिलाएंगे, हम लोग भी न खाऐंगे।"

तब कहीं जाकर ग़ुस्सा ठंडा हुआ और सब लोगों ने खाना खाया।

अन्तिम बात

ऐसा था हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का निजी जीवन! भला ऐसे व्यक्ति के रहते हुए इस्लामी राज्य का ख़लीफ़ा और कौन बन सकता था, सोचने और समझने की बात है। शासन की भारी ज़िम्मेदारियों से निबटने के लिए सूझ-बूझवाले दूरदर्शी, कर्मठ और निष्ठावान व्यक्ति की ज़रूरत है, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता, लेकिन इसके लिए शुद्ध मन, दृष्टि और शुद्ध भावनाओं वाले व्यक्ति की भी बड़ी ज़रूरत होती है। सफल ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन-चरित्र से हमें इसी की सीख मिलती है।

काश! हम उनको आदर्श मानकर कुछ सीखते और समझते।

इस्लामी अक़ीदे और उसूल और उनकी बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े इस क़िस्म के हैं कि उन पर अमल करने वाला एक इंसान इंसाफ़पसन्द हुक्मराँ (न्यायप्रिय शासक) और ख़ुदा का एक मिसाली इंसान बन जाता है। इस्लामी दौर के चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियाँ तो इनकी ज़िन्दा मिसाल हैं। इसी वजह से हम इन्हें याद रखते हैं और मिसाल समझ कर इनकी तक़लीद और पैरवी करना ज़रूरी समझते हैं। इसी वजह से हम इन चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियों को पेश कर रहे हैं ताकि इन्हें नमूना बना कर हम अपनी ज़िन्दगियों को बना-संवार सकें।

आपके हाथों में जो किताब है यह इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र की ज़िन्दगी के बारे में है जो हर पहलू से हमारे लिए मिसाल है और अपनी ज़िन्दगी को बनाने संवारने के लिए जिनकी तक़लीद और पैरवी ज़रूरी है।

इस किताब में हज़रत अबू बक्र की ज़िन्दगी के हालात आसान ज़बान में बयान किए गए हैं। आप मर्दों में वे पहले इंसान हैं जिन्होंने सबसे पहले इस्लाम क़ुबूल किया। आप ने सवा दो साल ख़िलाफ़त की लेकिन इस थोड़े अर्से में ऐसे कारनामे अंजाम दिए जिन्हें सदियों अंजाम देना मुश्किल है। ख़िलाफ़त के दौर का इल्म हासिल करने के लिए यह किताब बेहद मददगार है।

